मूल

सलमान रुश्दी

अनुवाद

नीलाभ

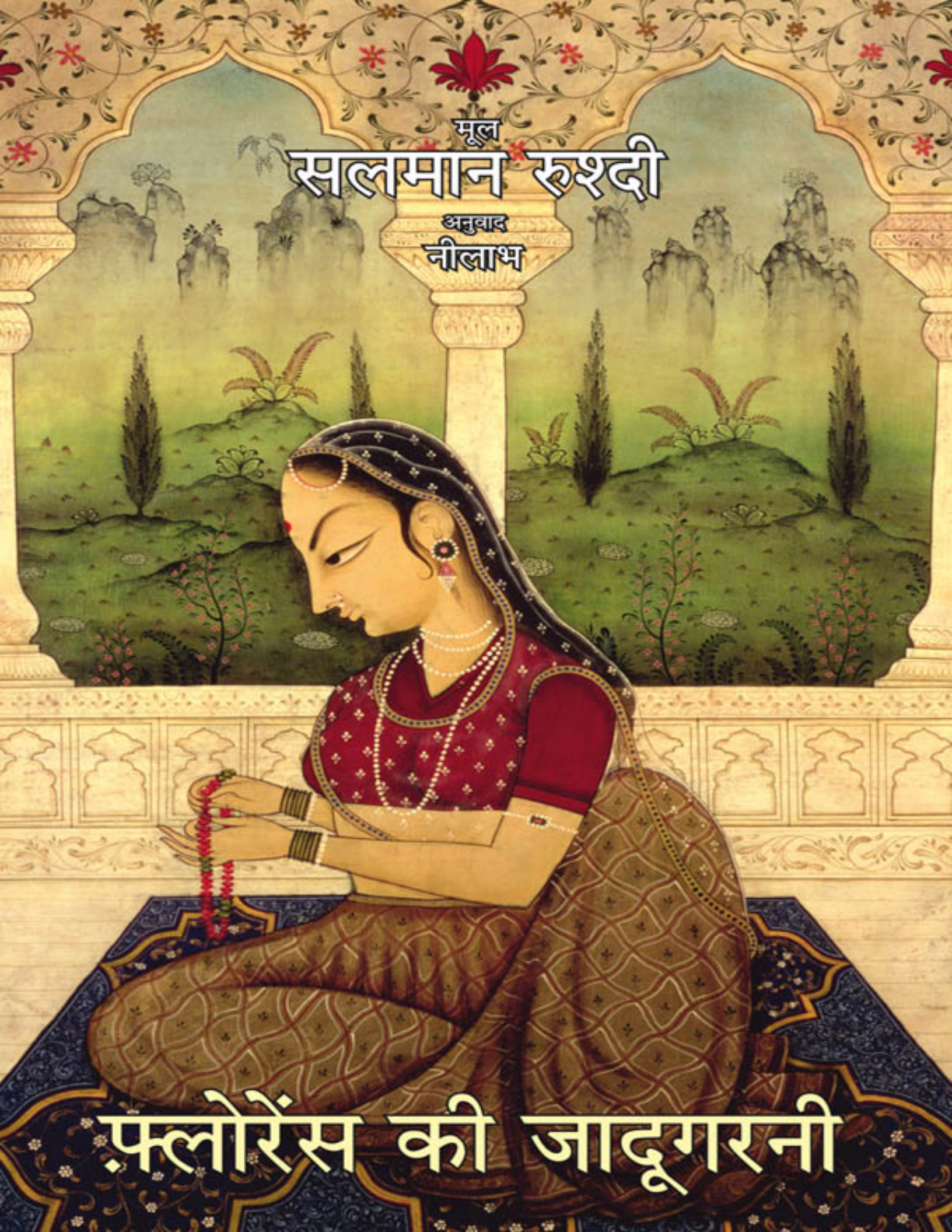

# फ़्लोरेंस की जादूगरनी

# फ़्लोरेन्स की जादूगरनी

# फ़्लोरेन्स की जादूगरनी

## सलमान रश्दी

अनुवाद
**नीलाभ**

रैण्डम हाउस इण्डिया

रैण्डम हाउस इंडिया द्वारा 2009 में प्रकाशित

कॉपीराइट © सलमान रुश्दी 2009
अनुवाद © नीलाभ

प्रकाशक:
रैण्डम हाउस पब्लिशर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
विंडसर आईटी पार्क, सातवाँ तल, टावर-बी
ए-1, सेक्टर-125, नोएडा-201 301, उत्तर प्रदेश

रैण्डम हाउस ग्रूप लिमिटेड
20 वॉक्सहॉल ब्रिज रोड
लंदन एस डब्ल्यू 1वी 2 एस ए, यूनाइटेड किंगडम

इस ई-बुक का कॉपीराइट सुरक्षित है और प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना तथा् य किए जाते समय लागू होने वाले नियम व शर्तों के आधार पर, अथवा कॉपीराइट कानून के अंतर्गत लागू होने वाली शर्तों के बिना इस पुस्तक का नकल, पुन: प्रकाशन, हस्तांतरण, वितरण, किराए/पट्टे हेतु, लाइसेंस अथवा सामूहिक प्रदर्शन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकेगा। इस पुस्तक की सामग्री के अनधिकृत वितरण अथवा प्रयोग को लेखक एवं प्रकाशक के अधिकारों का उल्लंघन माना जाएगा तथा जो इसके जिम्मेदार होंगे उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है।

eISBN : 9788184005318

*बिल ब्यूफ़ोर्ड को*

# अनुक्रम


## एक

१
२
३
४
५
६
७
८
९

## दो

१०
११
१२
१३
१४
१५

## तीन

१६
१७
१८
१९

*संदर्भग्रंथ सूची*
*आभार*
*लेखक के विषय में*
*अनुवादक के विषय में*

*संयोजन और सम्पादन*

उसकी सचलता मानो
तनिक नहीं मरणशील बल्कि
आकार हो एक दैवी आभा का

और स्वर में भी गूँज एक उच्चतर
निरे मानवी-स्वर से...
चेतना आकाशी, सूर्य एक जीवित ज्यों
यह था जो देखा मैंने...

**फ़्रांचेस्को पेत्रार्का**
*ए. एस. क्लाइन के अनुवाद के आधार पर*

लाओ बुला के उसको, ग़र हो कोई अहले ज़बाँ
अजनबी इक शहर में है
कहना बहुत कुछ है उसे।

**मिर्ज़ा ग़ालिब**
*एस. आर. फ़ारुक़ी के अनुवाद के आधार पर*

# एक

## (१)

दिन के अन्तिम आलोक में शहर पनाह के नीचे की जगमग करती झील पिघले सोने के सागर सरीखी नज़र आ रही थी। सूर्यास्त के समय इस राह पर आता मुसाफ़िर—यही मुसाफ़िर जो अब झील के किनारे-किनारे चलती सड़क पर इस ओर आ रहा था—यक़ीन कर सकता था कि वह इतने समृद्ध सम्राट के सिंहासन की ओर बढ़ रहा है जो अपने मेहमानों को चकितविस्मित करने के लिए अपने ख़ज़ाने का एक हिस्सा धरती के एक विशाल विवर में उँडेलना बड़ी आसानी से गवारा कर सकता था। और सोने की यह झील चाहे जितनी बड़ी थी, वह इससे कहीं बड़े ख़ज़ाने से निकाली गयी एक बूँद भर ही होगी—मुसाफ़िर की कल्पना उस सागर-जननी के आकार को आँक भी नहीं सकती थी। न उस सुनहरे पानी के छोर पर पहरुए ही तैनात थे; तो क्या बादशाह इतना फ़राख़-दिल था कि वह अपनी रियाया को, और शायद इस मुसाफ़िर जैसे अजनबियों और सैलानियों को, झील से बेरोकटोक यह तरल अवदान खींच लेने की छूट देता था ? यह तो यक़ीनन शाहों का शाह होगा, सचमुच का हातिम जिसकी सल्तनत गीतों और क़िस्सों में बखानी गयी थी और अद्भुत आश्चर्यों से भरी थी। शायद (यात्री ने अटकल भिड़ायी) शहर के परकोटों के भीतर अनन्त यौवन का सोता बहता था -शायद ज़मीन पर जन्नत का वह मशहूर दरवाज़ा भी कहीं नज़दीक ही था ? लेकिन फिर सूरज क्षितिज के नीचे सरक गया, सोना पानी की सतह के नीचे डूबता चला गया और गुम हो गया। भोर के आने तक उस पर जल परियाँ और अजदहे पहरा देने वाले थे। तब तलक, पानी ही पेश किया जाने वाला अकेला ख़ज़ाना था, ऐसा तोहफ़ा जिसे प्यासे मुसाफ़िर ने कृतज्ञता के साथ स्वीकार किया।

अजनबी बैलगाड़ी में सवार था, लेकिन उसके भीतर बिछे खुरदरे गद्दे पर बैठने की बजाय, वह किसी देवता की तरह खड़ा था, बेफ़िक्री से गाड़ी के जालीदार चौखट की पट्टी को एक लापरवाह हाथ से थामे हुए। बैलगाड़ी की सवारी और चाहे जो हो, हिचकोलों से क़तई बरी नहीं थी, दो पहियों वाली गाड़ी बैल के खुरों की लय पर डोलती-डगमगाती और इसके अलावा पहियों के नीचे बिछे राजमार्ग की अपनी मौज और तरंग के आगे भी मजबूर। खड़ा हुआ आदमी आसानी से गिर कर गरदन तुड़वा सकता था। इसके बावजूद वह अजनबी इतमीनान से भरा और निश्चिन्त नज़र आता हुआ खड़ा था। गाड़ीवान ने बहुत पहले ही उस पर बरसना छोड़ दिया था, शुरू-शुरू में इस विदेशी को बेवक़ूफ़ मान कर - अगर वह सड़क पर ही मरना चाहता है तो ख़ुशी से मरे, क्योंकि इस मुल्क में किसी शख़्स को अफ़सोस नहीं होने वाला। जल्दी ही, गाड़ीवान की हिक़ारत, बेमन से की गयी तारीफ़ में बदल गयी थी। शायद यह आदमी सचमुच बेवक़ूफ़ था, कोई यहाँ तक कह सकता था कि उसके चेहरे पर एक ज़ाहिर बेवक़ूफ़ाना ख़ूबसूरती थी और उसने लिबास भी बेमेल और बेवक़ूफ़ाना पहन रखा था - इस गर्मी में रंगीन चारख़ानेदार चमड़े का कोट! - लेकिन उसकी सन्तुलन बनाये रखने की कूवत क़ाबिले-तारीफ़ थी। बैल मन्थर गति से भारी क़दम रखता बढ़ा जा रहा था, गाड़ी के पहिये गड्ढों और पत्थरों से

टकराते हुए हिचकोले खा रहे थे, तो भी गाड़ी में खड़ा शख़्स मुश्किल से ही लहरा रहा था और जाने कैसे सजीला नज़र आने में कामयाब था। सजीला बेवक़ूफ़ है यह, गाड़ीवान ने सोचा, या शायद यह बेवक़ूफ़ है ही नहीं। शायद ऐसा शख़्स है जिससे पाला पड़ना भारी साबित हो सकता है। अगर उसमें कोई ऐब था, तो वह दिखावे का था – न सिर्फ़ जैसा वह है वैसा नज़र आना, बल्कि ऊपर से ख़ुद अपनी नुमाइश भी करना, मगर गाड़ीवान ने सोचा, यहाँ भी हर किसी में कमोबेश यह सिफ़त है, इसलिए यह आदमी भी हमारे लिए आख़िरकार उतना बिदेसी नहीं है। जब यात्री ने अपनी प्यास का ज़िक्र किया तो गाड़ीवान ने पाया कि वह झील के किनारे तक ख़ुद जा कर कद्दू के खोखल के चिकने तूम्बे में पानी ला कर उस परदेसी के सामने उठा कर यों पेश कर रहा है, मानो वह ख़िदमत के क़ाबिल कोई शरीफ़ज़ादा हो।

'तुम बस किसी नवाब की तरह खड़े रहो और मैं उछलता-दौड़ता तुम्हारा हुक्म बजाऊँ,' गाड़ीवान ने त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा। 'ख़ुदा जाने मैं क्यों तुम्हारे साथ इतना भला बरताव कर रहा हूँ। तुम्हें यह हक़ किसने दिया कि मुझ पर हुकुम चलाओ ? भला तुम हो कौन ? राजा-नवाब तो हो नहीं, यह पक्का है, वरना तुम इस गाड़ी में न होते। इसके बावजूद तुम्हारा रंग-ढंग कुछ ख़ास है। इसलिए बहुत करके तुम कोई ठग-बदमाश क़िस्म के बन्दे हो।' उस दूसरे आदमी ने तूम्बे से डट कर पानी पिया। पानी उसके होंटों के किनारों से नीचे बह कर उसकी मुँड़ी हुई ठोड़ी पर एक तरल दाढ़ी की तरह लटकता दिखायी दिया। आख़िरकार उसने ख़ाली तूम्बा वापस किया, राहत की साँस छोड़ी और दाढ़ी को पोंछ दिया। 'भला कौन हूँ मैं ?' उसने मानो ख़ुद से कहा मगर गाड़ीवान की भाषा में। 'मैं वह आदमी हूँ जिसके पास एक राज़ है, समझे – एक राज़ जिसे सिर्फ़ बादशाह के कान ही सुन सकते हैं।' गाड़ीवान को तसल्ली हुई : यह आदमी बेवक़ूफ़ ही था आख़िरकार। इसके साथ इज़्ज़त से पेश आने की ज़रूरत नहीं थी। 'रखे रहो अपना राज़,' उसने कहा। 'राज़ या तो बच्चों के लिए होते हैं या जासूसों के लिए।' अजनबी बैलगाड़ी से सराय के बाहर उतर गया जहाँ सारे सफ़र ख़त्म होते थे और शुरू भी। वह ग़ैरमामूली तौर पर लम्बा-तड़ंगा था और उसके हाथ में एक सफ़री झोला था। 'और जादूगरों के लिए,' उसने बैलगाड़ी के गाड़ीवान से कहा। 'और प्रेमियों के लिए भी। और बादशाहों के लिए।'

सराय के भीतर शोर-ग़ुल और हलचल का आलम था। जानवरों की देख-भाल हो रही थी, घोड़े, ऊँट, बैल, गधे, बकरियाँ, जबकि दूसरे, पालतू न बनाये जा सकने वाले, जानवर बेलगाम घूम-फिर रहे थे : चिंचियाते बन्दर, कुत्ते जो किसी के पालतू नहीं थे। टैं-टैं करते तोते हरी आतिशबाज़ी की तरह आसमान में फट पड़ते। लोहारों की भट्ठियाँ दहक रही थीं, बढ़ई ठोंक-पीट में जुटे थे और उस विशाल चौक के चारों तरफ़ सफ़री सामान की दुकानों में लोग अपनी यात्राओं की जुगत बिठा रहे थे – रसद, मोमबत्तियाँ, तेल, साबुन और रस्सियाँ इकट्ठी करते हुए। लाल कमीज़ें और धोतियाँ पहने और पग्गड़ बाँधे कुली असम्भव-से आकार और वज़न के गट्ठर सिर पर उठाये अनवरत यहाँ-वहाँ भागा-दौड़ी मचाये हुए थे। कुल मिला कर ढेर सारा सामान उतारा-चढ़ाया जा रहा था। रात भर के लिए बिस्तर यहाँ सस्ते में हासिल हो सकते थे, बाध से बुनी लकड़ी की चारपाइयाँ जिन पर घोड़े के बालों से बने कँटीले गद्दे बिछे थे, सराय के विशाल अहाते को चारों तरफ़ से घेरे यक-मंज़िला इमारतों की छतों पर फ़ौजियों की क़तार की मानिन्द खड़ी थीं, बिस्तर जिन पर आदमी लेट कर ऊपर नभ की तरफ़ निहारते हुए ख़ुद को देवता समझ सकता था। परे, पश्चिम की तरफ़, बादशाह की फ़ौजों का लश्कर था जो अभी हाल जंग के मैदान से लौटा था और जिससे आता हुआ हलका-हलका शोर हवा में बसा हुआ था। फ़ौज को महलों के इलाक़े में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं थी, बल्कि उसे यहीं शाही पहाड़ी की तलहटी में ख़ेमे गाड़ कर बने रहना था। लड़ाई के मैदान से हाल ही में लौटी एक बेरोज़गार फ़ौज के साथ, होशियारी से पेश आना ज़रूरी था। अजनबी ने प्राचीन रोम के बारे में सोचा। सम्राट अपने निजी अंगरक्षकों के

सिवा और किसी सिपाही पर भरोसा नहीं करता था। मुसाफ़िर को मालूम था कि भरोसे का सवाल ऐसा सवाल था जिसका जवाब उसको तसल्लीबख़्श ढंग से देना पड़ेगा। अगर वह ऐसा नहीं कर पाया तो वह जल्द ही जान से हाथ धो बैठेगा।

सराय के नज़दीक ही, हाथी-दाँत से जड़ा मीनार महल के फाटक की तरफ़ जाने वाले रास्ते की निशानी थी। सारे हाथी बादशाह की मिल्कियत थे और उनके दाँतों को एक मीनार में जड़ कर वह अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा था। ख़बरदार! मीनार का कहना था। तुम गजपति के साम्राज्य में दाख़िल हो रहे हो, वह बादशाह जिसके पास इतने हाथी हैं कि वह इन प्राणियों के हज़ार दाँत महज़ मुझे सजाने में ख़र्च कर सकता है। मीनार में ताक़त की जो नुमाइश थी, उसमें मुसाफ़िर ने उसी क़िस्म की तड़क-भड़क को पहचाना जो ख़ुद उसकी पेशानी पर लौ की तरह प्रज्ज्वलित थी, या शैतान की मुहर की तरह; लेकिन मीनार बनाने वाले ने उस गुण को शक्ति में बदल दिया था जो यात्री में अकसर कमज़ोरी की निशानी समझा जाता था। क्या शक्ति ही एक बहिर्मुखी व्यक्तित्व की एकमात्र सार्थकता है ? यात्री ने ख़ुद से पूछा और जवाब नहीं दे सका, मगर उसने ख़ुद को यह उम्मीद करते पाया कि इस तड़क-भड़क के पीछे ताक़त के अलावा ख़ूबसूरती भी एक और बहाना हो सकती थी, क्योंकि वह यक़ीनन ख़ूबसूरत था और जानता था कि उसकी सूरत-शक्ल में एक अपनी ही ताक़त थी।

दाँतों वाली मीनार के परे एक विशाल कुआँ था और उसके ऊपर अबूझ और जटिल कल-पुर्ज़ों का समूह जो पहाड़ी पर बने अनेक गुम्बदों वाले महल के लिए पानी का बन्दोबस्त करता था। *पानी के बिना हम कुछ नहीं हैं, मुसाफ़िर ने सोचा। बादशाह भी पानी से वंचित किये जाने पर धूल में तब्दील हो जायेगा। पानी ही असली शहंशाह है और हम सब उसके ग़ुलाम हैं।* अपने घर फ़्लोरेन्स में वह एक बार ऐसे आदमी से मिला था जो पानी को ग़ायब कर सकता था। बाज़ीगर ने एक पात्र लबालब भरा था, एक मन्तर पढ़ा था, पात्र को उलट दिया था और पानी की बजाय उसमें से कपड़ा बाहर निकला था, रंगीन रेशमी रूमालों की एक झड़ी। वह हाथ की सफ़ाई थी यक़ीनन, और उस दिन के ख़त्म होते-न-होते उसने, यानी मुसाफ़िर ने, बाज़ीगर से उसका भेद उगलवा लिया था और उसे अपने ख़ुद के रहस्यों के पिटारे में छिपा लिया था। वह ऐसा आदमी था जिसके पास कई रहस्य थे, लेकिन उनमें से सिर्फ़ एक किसी बादशाह के लायक़ था।

शहर के परकोटे को जाने वाली सड़क पहाड़ी पर तेज़ी से चढ़ती चली गयी थी और जैसे-जैसे वह उसके साथ चढ़ा, उसकी निगाह उस जगह की लम्बाई-चौड़ाई पर गयी जहाँ वह आन पहुँचा था। साफ़ तौर पर यह दुनिया के शानदार शहरों में से एक था, फ़्लोरेन्स या वेनिस या रोम से बड़ा, जैसा कि उसकी आँखों को अन्दाज़ा हुआ, उन सभी शहरों से बड़ा जो मुसाफ़िर ने अब तक देखे थे। एक बार उसने लन्दन का सफ़र भी किया था। वह भी इससे छोटा महानगर था। रोशनी के मद्धिम होने के साथ-साथ शहर का आकार मानो बढ़ता हुआ लगा। उसकी दीवारों के बाहर घनी बस्तियाँ एकदूसरे से सट कर पसरी हुई थीं। मुअज़्ज़िन अपने मीनारों से अज़ान दे रहे थे, और दूर फ़ासले पर उसे बड़े-बड़े अहातों की रोशनियाँ नज़र आ रही थीं। झुटपुटे में अलाव सुलगने लगे थे, चेतावनियों की तरह। काले आसमानी कटोरे में सितारों के जवाबी अलाव जल उठे। *मानो धरती और आकाश लड़ाई की तैयारी करती फ़ौजें थीं, उसने सोचा। मानो उनके शिविर रात के वक़्त शान्त रहते हैं और दिन की जंग की शुरुआत का इन्तज़ार करते हैं।* और गली-मुहल्लों की इस भूल-भुलैयाँ में और दूर, मैदानों पर बली-बहादुरों के उन सारे घरों में एक भी ऐसा आदमी नहीं था जिसने उसका नाम सुन रखा था, न कोई ऐसा था जो उस क़िस्से पर जल्दी किये यक़ीन कर लेता जो सुनाने के लिए उसके पास था। इसके बावजूद

उसे वह क़िस्सा सुनाना था। उसे सुनाने के लिए ही वह दुनिया के तूल-अर्ज़ को पार करके यहाँ आया था, और वह उसे सुनाये बग़ैर नहीं रहने वाला था।

वह लम्बे-लम्बे डग भरता चल रहा था और बहुत-सी उत्सुक जिज्ञासु निगाहें उसकी ओर आकर्षित हो रही थीं, उसके सुनहरे बालों की वजह से भी और उसके लम्बे क़द की भी, उसके लम्बे और प्रकट रूप से मैले पीले बाल उसके चेहरे के गिर्द नीचे को लहरा रहे थे, झील के सुनहरे पानी की तरह। रास्ता दाँतों की मीनार से होता हुआ ऊपर को एक पत्थर के फाटक की तरफ़ चढ़ गया था, जिस पर एक-दूसरे की ओर मुँह किये दो हाथी पत्थर काट कर गढ़े गये थे। इस फाटक से, जो खुला था, लोगों के खाने, पीने, और मौज-मस्ती करने की आवाज़ें आ रही थीं। हथियापुल फाटक पर सिपाही पहरे पर तैनात थे, मगर उनके हाव-भाव में ढीलापन था। असली अवरोध तो आगे आने वाले थे। यह तो आम जगह थी, मेल-मुलाक़ात, ख़रीदो-फ़रोख़्त और मौज-मस्ती की जगह। लोग मुसाफ़िर के अगल-बग़ल से गुज़र रहे थे, अपनी-अपनी भूख और प्यास से हँकाये जाते। बाहरी और भीतरी फाटक के बीच, पत्थर-जड़ी सड़क की दोनों तरफ़ सरायें, ढाबे, खाने के ठेले और किसिम-किसिम के फेरीवाले थे। यहाँ ख़रीदने और ख़रीदे जाने का सनातन व्यापार जारी था। कपड़े, बर्तन, सस्ते टूम-छल्ले, हथियार, शराब। मुख्य बाज़ार शहर के निस्बतन छोटे दक्षिणी फाटक के परे था। नगर-निवासी वहाँ बाज़ार करते और इस जगह से कतराते, जो नये-नये आने वाले अबोध लोगों के लिए थीं जिन्हें चीज़ों की असली क़ीमतें नहीं पता थीं। यह उचक्कों-उठाईगीरों का बाज़ार था, ठगों-फ़रेबियों का बाज़ार, कर्कश, अनाप-शनाप क़ीमतों वाला, हिक़ारत के क़ाबिल। लेकिन थके हुए यात्रियों के सामने, जिन्हें शहर का अता-पता नहीं था और जो किसी भी सूरत में बाहरी दीवारों का पूरा चक्कर काट कर, दूसरी तरफ़ के बड़े और सही क़ीमतों वाले बाज़ार में जाने के इच्छुक नहीं थे, हथियापुल फाटक के आस-पास के व्यापारियों से ही काम चलाने के अलावा और कोई चारा नहीं था। उनकी ज़रूरतें सीधी-सादी थीं और फ़ौरन पूरी होना माँगती थीं।

ज़िन्दा मुर्ग़, देगची में जाने के इन्तज़ार में, दोनों टाँगों से बँधे, फड़फड़ाते हुए, डर से शोर मचाते, उलटे लटके हुए थे। शाकाहारियों के लिए दूसरे, ज़्यादा ख़ामोश पतीले थे; सब्ज़ियाँ चीख़ती नहीं थीं। और वो आवाज़ें क्या औरतों की थीं जो यात्री को हवा पर तिरती हुई सुनायी दे रही थीं, किलकतीं, रिझातीं, लुभातीं, अनदेखे पुरुषों पर हँसतीं ? क्या वो महक औरतों की थी जो उसे शाम की बयार पर बहती हुई महसूस हो रही थी ? हर हाल में, आज की रात तो बादशाह की तलाश शुरू करने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। मुसाफ़िर की जेब में कलदार थे और वह एक लम्बा, घुमावदार सफ़र तय करके आया था। उसका यही तरीक़ा था : अपनी मंज़िल की तरफ़ टेढ़े-मेढ़े रास्ते से जाना, बहुत-से चक्कर काटते हुए, भटकते हुए। सूरत पर जहाज़ से उतरने के बाद वह बुरहानपुर, हँडिया, सिरौंज, नरवार, ग्वालियर और ढोलपुर होते हुए आगरा पहुँचा था, और आगरा से यहाँ, इस नयी राजधानी में। अब वह एक बिस्तर चाहता था, जितना ज़्यादा-से-ज़्यादा आरामदेह उसे मिल सके; और एक औरत, मूँछरहित हो तो और भी अच्छा, और अन्त में विस्मृति का एक अंश, वह आत्म-पलायन जो कभी औरत की बाँहों में नहीं, बल्कि अच्छी, कड़ी शराब में हासिल होता है।

बाद में, जब उसकी इच्छाएँ पूरी हो चुकीं, वह एक महकते हुए चकले में, उनिद्रा की मारी पतुरिया की बग़ल में लेटा, डट कर ख़र्राटे लेता रहा, सपने देखता हुआ। वह सात ज़बानों में सपने देख सकता था : इतालवी, स्पेनी, अरबी, फ़ारसी, रूसी, अंग्रेज़ी, और पुर्तगाली। ज़बानें कुछ इस तरह उससे आ चिपकी थीं जैसे बीमारियाँ जहाज़ियों से आ चिपकती हैं; भाषाएँ उसका उपदंश थीं, सूज़ाक थीं, फोड़े-फुंसियाँ, बुख़ार और ताऊन थीं। जैसे ही वह नींद में डूबता, आधी दुनिया उसके दिमाग़ में बक-बक करना शुरू कर देती, मुसाफ़िरों

वाले अद्भुत क़िस्से सुनाती हुई। इस आधी-खोजी दुनिया में हर नया दिन नये आकर्षणों, सम्मोहनों की सूचनाएँ लाता। जूड़ी के बुख़ार-सरीखी दैनिक दूरदर्शी, दैवी स्वप्न-कविता को सपाट सच्चाइयों के चुँधे हुए गद्य ने कुचला नहीं था। वह ख़ुद एक क़िस्सा-गो था और अद्भुत कहानियाँ उसे उसकी दहलीज़ के बाहर खींच लायी थीं, ख़ास तौर पर एक क़िस्सा जो या तो उसकी क़िस्मत पलट सकता था या फिर उसकी जान की कुर्बानी वसूल सकता था।

## (२)

स्कॉटलैण्डवासी श्रीमन्त के दस्यु पोत *स्कैथैच* पर – जिसका नाम स्काई की एक विख्यात योद्धा-देवी के नाम पर रखा गया था और जिसके जहाज़ी अतलान्तिक महासागर में यूरोप और अमरीका के बीच के जल-मार्ग पर मज़े से लूट-पाट करते फिरते रहे थे, मगर जो अब सरकारी काम से हिन्दुस्तान जा रहा था, छिप कर यात्रा कर रहे सुस्त और क्लान्त फ़्लोरेन्सवासी ने पकड़े जाने पर, पालों की देख-भाल करने वाले अफ़सर को चकित करते हुए उसके कान से ज़िन्दा पानी का साँप निकाल कर उसे जहाज़ के बाहर पानी में फेंक कर ख़ुद को बिना सुनवाई, तुरत-फुरत, दक्षिणी अफ्रीका की वाइट रिवर में फेंके जाने से बचाया था। उसे जहाज़ के अगले हिस्से में, जहाँ जहाज़ी सोते थे, एक खटोले के नीचे से धर लिया गया था जब जहाज़ अफ्रीकी महाद्वीप के दक्षिण छोर पर ऐगुल्हास अन्तरीप के गिर्द चक्कर काट कर आगे सात दिन का सफ़र तय कर चुका था। उसने गाढ़े पीले रंग की कुर्ती और चुस्त पाजामी पहन रखी थी और एक बड़े-से लबादे को अपने गिर्द लपेट रखा था जो चमड़े के बर्फ़ी जैसे चौकोर रंग-बिरंगे टुकड़ों को जोड़ कर बनाया गया था। एक छोटा-सा कपड़े का झोला उसने बाँहों में भींच रखा था और छिपने की रत्ती भर कोशिश किये बिना, बीच-बीच में ज़ोर से ख़र्राटे लेता हुआ, गहरी नींद सो रहा था। लगता था कि वह पकड़े जाने के लिए बिलकुल तैयार था, और रिझाने, मनाने और सम्मोहित करने की अपनी शक्तियों पर आश्चर्यजनक रूप से आश्वस्त। आख़िरकार, वे उसे एक लम्बा रस्ता तो पार करा ही लायी थीं। बेशक, उसने अपनी चतुर जादूगरी के कारनामे तो दिखा ही दिये थे। उसने सोने की मोहरों को धुएँ में और पीले धुएँ को वापस सोने में बदल दिया था। ताज़ा पानी के जग को तेज़ी से उलटने पर उसमें से रेशमी रूमालों की धारा फूट पड़ी थी। उसने अपने सुडौल हाथों को एक-दो बार फेर कर मछलियों और रोटियों की तादाद दुगनी-तिगुनी कर दी थी, जो यक़ीनन कुफ्र था, लेकिन भूखे मल्लाहों ने आसानी से उसे माफ़ कर दिया था। उन्होंने जल्दी से अपने माथे और कन्धों को छूते हुए सलीब का निशान बनाया था ताकि वे इस बाद के चमत्कारी द्वारा अपनी जगह हड़पे जाने से उपजे ईसा मसीह के सम्भावित कोप से ख़ुद को बचाये रख सकें। इसके बाद उन्होंने अनपेक्षित रूप से भरपूर, हालाँकि आध्यात्मिक रूप से अशुद्ध इस भोजन को फटाफट भकोस लिया था।

यहाँ तक कि जब उसे फ़ैसला किये जाने के लिए उनके कक्ष में लाया गया था, तो स्वयं स्कॉटलैण्ड के श्रीमन्त भी, वही हॉक्सबैंक वाले जॉर्ज लुई हॉक्सबैंक – यानी स्कॉटलैण्ड के चलन के मुताबिक़ कहें तो हॉक्सबैंक के हॉक्सबैंक, वह कुलीन श्रीमन्त जिनका घालमेल ग़लती से भी घटिया जगहों के अपेक्षाकृत छोटे और अकुलीन हॉक्सबैंकों के साथ नहीं करना चाहिए – उस बिन-बुलाये घुस आने वाले भाँड़ से बड़ी जल्दी मोहित हो गये थे । उस वक़्त वह युवा बदमाश ख़ुद को 'उचेल्लो' बता रहा था – 'उचेल्लो दि फ़िरेंज़े, बाज़ीगर और विद्वान, आपकी ख़िदमत में पेश है,' उसने विशुद्ध अंग्रेज़ी में, लगभग कुलीन कौशल से बाँहें फैला कर नीचे तक झुकते और कोर्निश बजाते हुए कहा था, और लॉर्ड हॉक्सबैंक ने मुस्करा कर अपना सुगन्धित रूमाल नाक से लगा कर साँस खींची थी। 'मैंने इस पर यक़ीन कर लिया होता, जादूगर,' उन्होंने जवाब दिया, 'अगर मैं

इसी नाम और जगह के चित्रकार पाओलो के बारे में न जानता, जिसने तुम्हारे ही क़स्बे के गिरजे में मेरे अपने पूर्वज सर जॉन हॉक्सबैंक के सम्मान में उनके कारनामे दर्शाता एक चित्र न बनाया होता, जो पेशेवर सिपाही, फ़्लोरेन्स के भूतपूर्व सिपहसालार और पोलपेत्तो की लड़ाई के विजेता थे और जियोवान्नी मिलानो के नाम से जाने जाते थे; और वह चित्रकार दुर्भाग्य से अर्सा पहले ही दिवंगत न हो गया होता।' नौजवान लफ़ंगे ने अपनी ज़बान को दाँतों से सटा कर एक धृष्टता-भरी 'चच्च, चच्च' की आवाज़ की। 'ज़ाहिरा तौर पर मैं वह दिवंगत चित्रकार नहीं हूँ,' उसने एक बाँकी अदा अख़्तियार करते हुए कहा। 'मैंने यह तख़ल्लुस इसलिए चुना है, क्योंकि मेरी भाषा में यह शब्द 'परिन्दे' के लिए इस्तेमाल होता है, और परिन्दे सबसे शानदार मुसाफ़िर होते है।'

इतना कह कर उसने अपनी सीने से एक टोपी-चढ़ा बाज़ खींच निकाला और हवा से एक दस्ताना, और दोनों को चकित श्रीमन्त को थमा दिया। 'हॉक्सबैंक के श्रीमन्त के लिए बाज़ हाज़िर है, 'उसने पूरे अदब के साथ कहा और जब लॉर्ड हॉक्सबैंक के हाथ पर दस्ताना और दस्ताने पर बाज़ पहुँच गया तो उसने, 'उचेल्लो' ने, अपने प्रेमी को रुख़सत करती महिला के अन्दाज़ में चुटकी बजायी, जिससे स्कॉटलैण्डवासी श्रीमन्त को पूरी तरह भौंचक्का छोड़ कर दोनों ग़ायब हो गये - टोपी से ढँका बाज़ भी और बाज़ से ढँका दस्ताना भी। 'इसलिए भी,' जादूगर ने अपने नाम के सिलसिले में की रही बातचीत की तरफ़ लौटते हुए कहा, 'कि मेरे शहर में यह नक़ाब-रूपी शब्द, यह छिपा हुआ परिन्दा, कोमल कान्त पदावली में पुरुष के सबसे ज़रूरी औज़ार के लिए इस्तेमाल होता है, और हालाँकि मेरे पास जो है उस पर मैं गर्व तो कर सकता हूँ, मगर उसे प्रदर्शित करने की असभ्यता नहीं।'

'हाः-हाः-हाः!' हॉक्सबैंक के लॉर्ड हॉक्सबैंक ने क़ाबिले-तारीफ़ फुरतीलेपन से दोबारा सहज होते हुए कहा। 'वाक़ई, अब तो हम दोनों के मामले में सचमुच कुछ ऐसा है जो एक समान है।'

वे एक दुनिया-देखे श्रीमन्त थे, ये हॉक्सबैंक वाले लॉर्ड हॉक्सबैंक, और जितना वे दिखते थे, उससे ज़्यादा उम्रदराज़। उनकी आँखों में चमक बाक़ी थी और चमड़ी भी साफ़, बेदाग़ थी, लेकिन सात या इससे ज़्यादा बरस हो चुके थे उन्हें चालीसवाँ पार किये। उनकी तलवारबाज़ी के चर्चे आम थे और वे एक चिट्टे साँड़ जितने ताक़तवर थे और बेड़े पर सवार हो कर कार क़्यू झील में पीली नदी के स्रोत तक का सफ़र कर आये थे, जहाँ उन्होंने सोने के कटोरे में दम दे कर पकाया हुआ बाघ का शिश्न खाया था और उन्होंने नगोरौंगो ज्वालामुखी के सफ़ेद गैंडे के शिकार में हिस्सा लिया था और स्कॉटलैण्ड के मनरो इलाक़े में सारी-की-सारी दो सौ चौरासी चोटियाँ सर की थीं, बेन नेविस से ले कर, दुर्धर्ष स्कैथेच के निवास - स्काई द्वीप - पर स्गर डीर्ग के अगम्य शिखर तक। अर्सा पहले हॉक्सबैंक के क़िले में वे अपनी पत्नी से झगड़ पड़े थे जो घुँघराले लाल बालों और हॉलैण्ड के सरौते जैसे जबड़े वाली की एक नन्ही-सी कटखनी औरत थी और वे उसे स्कॉटलैण्ड की पहाड़ियों में काली भेड़ें पालने के लिए छोड़ कर अपनी क़िस्मत बनाने चल दिये थे जैसा कि उनसे पहले उनके पूर्वज ने किया था और जब ड्रेक ने अमरीका से सोना लाने वाले स्पेनी जहाज़ों को लूटना शुरू किया था तो उन्होंने ड्रेक का मातहत बन कर एक जहाज़ की कप्तानी सँभाली थी। कृतज्ञ महारानी की ओर से उन्हें पुरस्कार में यह दूत-कार्य सौंपा गया था जिसे सम्पन्न करने के लिए वे यह सफ़र कर रहे थे; उन्हें *हिन्दूस्तान* जाना था जहाँ वे उस माले-ग़नीमत को हासिल करने और अपने पास रखने के लिए आज़ाद थे, जो उनके हाथ लगे, चाहे यह दौलत रत्नों की शक्ल में हो या अफ़ीम की या फिर सोने की, बशर्ते कि वे महिमामयी के व्यक्तिगत पत्र को ले कर बादशाह को पहुचा दें और *मोगल* का जवाब ले कर घर लौटें।

'इटली में हम मोगोर कहते हें,' नौजवान मदारी ने उन्हें बताया।

'उस देश की नाक़ाबिले-तलफ़्फ़ुज़ ज़बानों में,' लॉर्ड हॉक्सबैंक ने आगे जोड़ा, 'कौन जानता है कि यह शब्द कैसे तोड़ा-मरोड़ा और ऐंठा जाता है।'

उनकी दोस्ती पर मुहर एक किताब ने लगा दी : पेट्रार्क की *गीतावली*, जिसका एक संस्करण हमेशा की तरह स्कॉटलैण्ड के श्रीमन्त की बग़ल में संगेमर्मर की मेज़ पर रखा था। 'वाह, महान पेट्रार्का,' 'उचेल्लो' चीख़ा। 'अब ये है सच्चा जादूगर।' और रोम के किसी पार्षद की भाषण देने वाली मुद्रा और हाव-भाव अपना कर, वह जोशीलेपन से पाठ करने लगा :

'बेनेदेत्तो सिया 'ल जिओर्नो, एट 'ल मेसे, एट ल'आन्नो
एट ला स्टैगियोने, ए 'ल टेम्पो, एट ल' ओरा, ए 'ल पुन्तो,
ए 'ल बेल पाएसे, ए 'ल लोको ओ'वियो फ़ुई जिउन्तो,
दा 'दुओ बेग्ली ओच्ची चे लेगातो मा'न्नो...'

इस पर लॉर्ड हॉक्सबैंक ने छन्द का तार अंग्रेज़ी में थाम लिया :

'... और भला हो पहली मधुर पीड़ा का
जो मिली मुझे प्रेम के पहले आलिंगन में,
और उस धनुष और तीरों का जिनसे मैं बिंध गया
'और भला हो उन ज़ख़्मों का जो उतरते चले गये मेरे हृदय की गहराई तक'

'जो भी आदमी इस कविता से उतना प्यार करता है जितना मैं, वह मेरा स्वामी होने योग्य है,' 'उचेल्लो' ने कोर्निश करते हुए कहा।

'और जो आदमी इन शब्दों के बारे में वैसा ही महसूस करता है जैसा मैं करता हूँ, वह मेरा हमप्याला होने के क़ाबिल है,' स्कॉटलैण्डवासी ने पलट कर कहा। 'तुमने वह चाभी घुमा दी है जिससे मेरे दिल के दरवाज़े खुल जाते हैं। अब मैं तुम्हारे सामने ऐसा राज़ पेश करने वाला हूँ, जिसे तुम किसी के सामने नहीं खोलोगे। आओ मेरे साथ।'

अपने शयन-कक्ष में एक सरकने वाले पल्ले के पीछे छोटे-से लकड़ी के डिब्बे में हॉक्सबैंक के श्रीमन्त हॉक्सबैंक ने अपनी मनभावन 'उत्कृष्ट वस्तुओं' का एक संग्रह रख छोड़ा था, सुन्दर नन्हीं-नन्ही वस्तुएँ जिनके बिना एक आदमी जो अनवरत यात्राएँ करता था अपना दिशा-ज्ञान भूल सकता था, क्योंकि बहुत ज़्यादा सफ़र, जैसा कि लॉर्ड हॉक्सबैंक को पता था, बहुत ज़्यादा विचित्रता और नयापन, आत्मा के बन्धनों को ढीला कर सकता था। 'ये चीज़ें मेरी नहीं हैं,' उन्होंने अपने नये फ़्लोरेन्स-वासी मित्र से कहा, 'फिर भी ये मुझे याद कराती रहती हैं कि मैं कौन हूँ। मैं कुछ समय के लिए इनके रखवाले का फ़र्ज़ अदा करता हूँ और जब वह समय पूरा हो जाता है, मैं इन्हें जाने देता हूँ।' उन्होंने डिब्बे से आश्चर्यजनक आकार और सफ़ाई के कई रत्न निकाले जिन्हें उन्होंने बेज़ारी से कन्धे उचकाते हुए एक ओर रख दिया, फिर स्पेनी सोने की एक सिल्ली जो उसे हासिल करने वाले किसी भी आदमी को ज़िन्दगी के बाक़ी दिन शान-शौक़त में बिताने के क़ाबिल बना सकती थी - 'यह कुछ नहीं है, कुछ नहीं,' वे बुदबुदाये - और इसी के बाद वे अपने असली ख़ज़ाने तक पहुँचे, हर चीज़ सावधानी से कपड़े में लपेटी हुई और मुचड़े काग़ज़ों और चिथड़ों में सँजोयी हुई : प्राचीन सोग़दिया के मूर्तिपूजकों की एक देवी का रेशमी रूमाल, जो उसके प्यार की निशानी के तौर पर एक भुला दिये गये वीर को दिया गया था; ह्वेल मछली की हड्डी पर उम्दा नक़्क़ाशी का नमूना जिसमें हिरन के शिकार का दृश्य उकेरा गया था; महामहिम महारानी के चित्रवाला एक लॉकेट; पवित्र भूमि से लायी गयी, चमड़े के जिल्दवाली षटकोनी किताब, जिसके छोटे-छोटे सफ़ों पर असाधारण रूप से अलंकृत बारीक़ अक्षरों में पूरी-की-पूरी क़ुरान लिखी

हुई थी; मकदूनिया से टूटी नाक वाला पत्थर का सिर जिसके बारे में प्रसिद्ध था कि वह सिकन्दर महान का चेहरा है; सिन्धु घाटी सभ्यता की एक रहस्यमय 'मुहर' जो मिस्र में हाथ लगी थी और जिस पर एक वृषभ और चित्र-लिपि की एक शृंखला उत्कीर्ण थी जिसे कभी बूझा नहीं गया था, एक ऐसी वस्तु जिसके उद्देश्य का पता किसी आदमी को नहीं था; एक चपटा, चिकनाया गया चीनी पत्थर जिस पर सुर्ख़ *आई चिंग* का एक षटकोणीय सितारा और गहरे कुदरती निशान थे जिन्हें देख कर गोधूलि के समय पर्वत शृंखला के दृश्य का आभास होता था; चीनी मिट्टी से बना एक चित्रित और रँगा हुआ अण्डा; ऐमेज़ॉन नदी के वर्षा वनों के निवासियों द्वारा बनायी गयी इन्सान की सिकुड़ी खोपड़ी; और पनामा भूसन्धि की विलुप्त भाषा का एक शब्दकोश जिसके बोलने वाले सब-के-सब लुप्त हो चुके थे सिवा एक बूढ़ी औरत के जो अपने दाँत खो बैठने की वजह से शब्दों का उच्चारण ठीक ढंग से नहीं कर पाती थी।

हॉक्सबैंक के श्रीमन्त ने क़ीमती काँच की बनी एक अलमारी खोली जो चामत्कारिक रूप से कई महासागरों को पार करने के बाद भी सही-सालिम बची हुई थी और उसमें से ग़ुब्बारे की शक्ल के पारदर्शी मुरानो गिलासों की एक-सी जोड़ी निकाली और दोनों में ब्रैण्डी की अच्छी-ख़ासी मिकदार डाल दी। छिप कर यात्रा करने वाले नौजवान ने नज़दीक आ कर एक गिलास उठाया। लॉर्ड हॉक्सबैंक ने गहरी साँस भर कर ब्रैण्डी को सूँघा और फिर घूँट भरा। 'तुम फ़्लोरेन्स के हो,' उन्होंने कहा, 'इसलिए तुम सम्राटों के सम्राट, इन्सान के अपने निजत्व की महिमा से परिचित हो, और उन लालसाओं से भी जिन्हें पूरा करने का वह प्रयास करता है, सुन्दरता की ख़ातिर, क़ीमत की एवज़ में - और प्रेम की ख़ातिर।' अपने को 'उचेल्लो' कहने वाले आदमी ने उत्तर देने के लिए मुँह खोला, लेकिन हॉक्सबैंक ने एक हाथ उठा कर उसे बरजा। 'मुझे बात पूरी करने दो,' उन्होंने बात जारी रखी, 'क्योंकि मुझे ऐसे मामलों पर चर्चा करनी है जिनके बारे में तुम्हारे महान दार्शनिक कुछ नहीं जानते। निजत्व राजसी हो सकता है, लेकिन उसकी क्षुधाएँ रंकों जैसी हैं। उसे कुछ क्षणों के लिए ऐसे आश्चर्यों की मंजूषा से पोसना मुमकिन है, लेकिन वह लाचार, भूखा, प्यासा बना रहता है। और वह ऐसा संकटग्रस्त सम्राट है, ऐसा सम्राट जो हरदम अनेक विप्लवियों की दया-माया पर निर्भर रहता है, मिसाल के लिए भय और चिन्ता, अकेलापन और व्यामोह, एक अजीब अबोला गर्व और एक बेलगाम, ख़ामोश शर्म। भेद निजत्व को घेरे रहते हैं, भेद उसे लगातार कुतरते रहते हैं, भेद उसके साम्राज्य को तहस-नहस कर देंगे और उसके राजदण्ड को धूल-मिट्टी में टूटा हुआ छोड़ जायेंगे।

'मैं देख रहा हूँ कि मेरी बातों से तुम चकरा गये हो,' उन्होंने साँस भरी, 'लिहाज़ा मैं अपनी बात सीधे-साफ़ ढंग से कहूँगा। जो राज़ तुम कभी किसी के सामने नहीं ज़ाहिर करोगे वह किसी डिब्बे में नहीं छिपा है। वह छिपा है-नहीं, वह छिपा नहीं है, बल्कि उजागर है - यहाँ।'

फ़्लोरेन्सवासी ने, जिसने अपने सहज ज्ञान के बल पर लॉर्ड हॉक्सबैंक की छिपी हुई लालसाओं की असलियत कुछ समय पहले ही जान ली थी, गम्भीरता से उस चित्तीदार अंग के आकार और व्यास के बारे में समुचित सम्मान प्रदर्शित किया जो श्रीमन्त की मेज़ पर उसके सामने खुला हुआ था, सौंफ़-सरीखा महकता हुआ, मानो फाँकों में काटे जाने के लिए तैयार मसालेदार *फ़िनोशियोना* सॉसेज हो। 'अगर आप समन्दर को अलविदा कह दें और मेरे शहर रहने के लिए आ जायें,' उसने कहा, 'तो आपकी मुसीबतें जल्द ही ख़त्म हो जायेंगी, क्योंकि सान लोरेंज़ों के नौजवानों में निश्चय ही आप उन पुरुषोचित प्रसन्नताओं को खोज सकेंगे जिनकी आपको तलाश है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे अफ़सोस है...'

'पी कर ख़त्म करो,' स्कॉटलैण्डवासी श्रीमन्त ने सुर्ख़ होते और अपने उघड़े अंग को वापस उसकी जगह पहुँचाते हुए, आदेश दिया। 'हम इस बारे में और कुछ नहीं कहेंगे।' उनकी आँख में ऐसी चमक थी जो उनके

साथी के ख़याल में उनकी आँख में न होती तो बेहतर था। इसके अलावा उनके साथी के ख़याल में यह भी बेहतर होता अगर उनका हाथ अपनी तलवार की मूठ के इतना क़रीब न होता। उनकी मुस्कान किसी पशु के दाँत चियारने सरीखी थी। इसके बाद एक लम्बी ख़ामोशी छायी रही जिसके दौरान छिप कर सफ़र करने वाले नौजवान को यह अन्दाज़ा हो गया कि उसकी क़िस्मत एक नाज़ुक से धागे से टँगी है। फिर हॉक्सबैंक ने अपने गिलास की ब्रैण्डी एक ही घूँट में ख़त्म की और एक कुत्सित, पीड़ा-भरी हँसी हँसे। 'ख़ैर जनाब,' उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा, 'तुम मेरा भेद जान गये हो और अब तुम्हारी बारी है कि मुझको अपना राज़ बतलाओ, क्योंकि तुममें भी यक़ीनन कोई रहस्य है, जिसे मैंने बेवक़ूफ़ी में अपने रहस्य जैसा ही समझा था और अब मुझे उसको साफ़-साफ़ जानना है।'

अपने को उचेल्लो दि फ़िरेंज़े कहने वाले आदमी ने बात बदलने की कोशिश की। 'क्या आप ख़ज़ाना ले जाने वाले जहाज़ *काकाफ़्युएगो* पर कब्ज़ा करने का क़िस्सा सुना कर मुझे सम्मानित नहीं करेंगे, जनाब ? और क्या आप ड्रेक के साथ वालपरेज़ो और नोम्ब्रे दि दियोस में नहीं थे - ज़रूर रहे होंगे - जब उन्हें वह चोट...' हॉक्सबैंक ने अपना गिलास दीवार पर दे मारा और तलवार खींच ली। 'लफ़ंगे,' वे चिल्लाये, 'सीधी तरह मुझे जवाब दे, वरना मरने के लिए तैयार हो जा।'

छिपे मुसाफ़िर ने अपने शब्द सावधानी से चुने। 'हुज़ूर,' उसने कहा, 'जैसा कि अब मुझे दिखाई दे रहा है, मैं यहाँ इसलिए मौजूद हूँ कि ख़ुद को आपके सेवक के रूप में पेश करूँ । लेकिन यह सच है,' उसने जल्दी से जोड़ा जैसे ही तलवार की नोक ने उसके गले को छुआ, 'कि मेरा एक और दूर का मक़सद भी है। मैं एक ऐसा आदमी हूँ जिसे आप खोज पर निकला कह सकते हैं - और इससे भी ज़्यादा, एक छिपी हुई खोज पर - लेकिन मैं आपको ख़बरदार कर दूँ कि मेरे रहस्य पर एक शाप है जो ज़माने की सबसे ताक़तवर जादूगरनी ने उसकी हिफ़ाज़त के लिए उसे दे रखा है। सिर्फ़ एक आदमी इस राज़ को सुन कर ज़िन्दा रह सकता है, वही इसे सुनने का हक़दार है और मैं आपकी मौत का ज़िम्मेदार नहीं होना चाहूँगा।'

हॉक्सबैंक के जागीरदार फिर हँसे, इस बार उनकी हँसी कुत्सित नहीं थी, बल्कि छँटते बादलों और खिलती धूप सरीखी थी। 'अच्छी दिलजोई कर रहे हो, मेरे नन्हें परिन्दे,' उन्होंने कहा। 'तुम्हारा ख़याल है, तुम्हारी उस हरे चेहरे वाली डायन के टोने की मुझे कोई परवाह है ? अरे, मैं प्रेतों के राजा बैरन समेदी के साथ मृतक-दिवस के समारोह में नाचा हूँ और उसकी टोनही चीख़-पुकार से सलामत निकल आया हूँ। अगर तुम फ़ौरन से पेशतर मुझे सब कुछ खुल्लम-खुल्ला नहीं बता देते तो मुझे बहुत नागवार गुज़रेगा।'

'जैसी आपकी मर्ज़ी,' छिपे हुए सफ़री ने कहना शुरू किया। 'बहुत दिन हुए एक साहसी राजकुमार था अर्गालिया, जिसे अर्कालिया भी कहते थे, एक महान वीर जिसके पास जादुई हथियार थे और जिसकी सेवा में चार भयानक देव-सरीखे सिपाही थे और उसके साथ एक औरत थी ऐंजेलीका...'

'रुको,' हॉक्सबैंक के श्रीमन्त हॉक्सबैंक ने अपने माथे को दबाते हुए कहा। 'तुम सिरदर्द पैदा कर रहे हो।' फिर, पल भर बाद,'आगे बोलो।' '...ऐंजेलीका, जो चंगेज़ ख़ान और तैमूर लंग के शाही ख़ानदान की शहज़ादी थी...' 'रुको। नहीं, आगे बोलो।' '... बेहद ख़ूबसूरत...' 'रुको।'

इसके बाद लॉर्ड हॉक्सबैंक बेहोश हो कर फ़र्श पर गिर पड़े।

◆◆◆◆◆

यात्री ने जिस आसानी से अपने मेज़बान के गिलास में अफ़ीम का अर्क मिला दिया था, उस पर लगभग लज्जित भाव से ख़ज़ाने के छोटे-से लकड़ी के बक्से को सावधानी से वापस उसकी छिपी हुई जगह में रखा, अपना रंग-बिरंगा लबादा अपने गिर्द लपेटा और मदद की गुहार लगाता हुआ जहाज़ के मुख्य तल पर पहुँचा। उसने यह लबादा ताश की एक बाज़ी में वेनिस के एक चकित हीरों के व्यापारी से जीता था जिसे यकीन नहीं हो रहा था कि एक मामूली फ़्लोरेन्सवाला रियाल्टो में आ कर स्थानीय लोगों को ख़ुद उनके खेल में मात दे सकता था। दाढ़ी और घुँघराले वालों वाले इस यहूदी व्यापारी, शालाख कॉरमोरानो ने इस लम्बे कोट को ख़ास तौर पर वेनिस की सबसे मशहूर दर्ज़ी की दुकान से बनवाया था, जो इल *मोरो इनविडियोसो* के नाम से प्रसिद्ध थी, क्योंकि उसके दरवाज़े पर लगी तख़्ती पर हरी आँखों वाले अरब की तस्वीर बनी थी, और यह लम्बा लबादेनुमा कोट एक रहस्यमय चमत्कार था, जिसके अस्तर में छिपी हुई जेबों और तहों की एक भूल भुलैयाँ थी जिसके भीतर हीरों का व्यापारी अपना बेशक़ीमती माल-मता सँजो कर रख सकता था और 'उचेल्लो दि फ़िरेंज़े' जैसा जुआरी तरह-तरह की चालें छिपा सकता था। 'जल्दी आओ, साथियो, दौड़ कर आओ,' मुसाफ़िर ने चिन्ता का विश्वसनीय प्रदर्शन करते हुए कहा। 'हुज़ूर को हम सब की ज़रूरत आ पड़ी है।'

अगर राजदूत बने इन भाड़े के मल्लाहों की सख़्तजान टोली में बहुत-से मीन-मेख निकालने वाले थे जिनके भीतर अपने नायक के अचानक ढह पड़ने के ढंग से शक पैदा हो गये थे और जिन्होंने नवागन्तुक को ऐसी नज़रों से देखना शुरू कर दिया था जो उसकी सेहत के लिए मुफ़ीद नहीं थीं, तो भी वे कुछ हद तक उस प्रकट चिन्ता से आश्वस्त हो गये थे जो 'उचेल्लो दि फ़िरेंज़े' ने उनके स्वामी के प्रति प्रदर्शित की थी। उसने बेहोश बन्दे को पलँग तक उठा कर ले जाने में मदद की थी, उसके कपड़े उतारे थे, उसे पाजामा पहनाने की मुश्किल से जूझा था, उसके माथे पर गरम और ठण्डी पट्टियाँ रखी थीं और स्कॉटलैण्डवासी श्रीमन्त की सेहत के बेहतर होने तक खाने-पीने और सोने से गुरेज़ किया था। जहाज़ के डॉक्टर ने छिप कर यात्रा कर रहे इस मुसाफ़िर को एक अमूल्य सहायक घोषित कर दिया था और यह बात सुन कर जहाज़ के मल्लाह बुड़बुड़ाते और कन्धे उचकाते हुए अपनी-अपनी तयशुदा जगहों पर चले गये थे।

जब वे अचेत व्यक्ति के साथ अकेले छूट गये तो डॉक्टर ने 'उचेल्लो' के सामने स्वीकार किया कि वह इस बात से चकित था कि श्रीमन्त की यह अचानक आयी बेहोशी दूर क्यों नहीं हो रही थी। 'जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, जै भगवान, इस आदमी के साथ कुछ गड़बड़ नहीं है, सिवा इसके कि वह होश में नहीं आ रहा,' उसने कहा, 'और प्रेम से रहित इस दुनिया में जागे रहने से सपने देखना शायद बेहतर है।'

डॉक्टर हॉकिन्स एक सीधा-सादा शख़्स था, जिसका नाम भगवान भला करे रख दिया गया था; लड़ाइयों में तपा हुआ और इलाज-उपचार की सीमित जानकारी वाला नेक जर्राह जो अपने जहाज़ी साथियों के शरीरों से स्पेनी गोलियाँ निकालने और आमने-सामने की लड़ाई में लगे तलवार के घावों को सिलने में ज़्यादा महारत रखता था, बनिस्बत अजीबो-ग़रीब नींद की बीमारियों को ठीक करने के जो हवा से इस तरह प्रकट होती थीं जैसे छिप कर सफ़र करने वाला कोई यात्री या ख़ुदा का कोई फ़ैसला। हॉकिन्स अपनी एक आँख वालपरेज़ो में गँवा आया था और आधी टाँग नोम्ब्रे दि दियोस में और वह ओपोर्तो के रिबेयरा मुहल्ले में छज्जे पर खड़ी किसी युवती के सम्मान में हर रात, एक क़िस्म के बनजारों वाले रबाब को बजाते हुए, उदासी-भरे पुर्तगाली प्रेम-गीत गाया करता था। गाते हुए हॉकिन्स आँसुओं की झड़ी लगाये रखता था और 'उचेल्लो' समझ गया था कि नेक दिल डॉक्टर, ख़ुद को पीड़ित करने के लिए, अपने साथ की गयी बेवफ़ाई की कल्पना कर रहा था, उन आदमियों के साथ हमबिस्तरी करती हुई अपनी मदिरा-प्रेमी जाने-तमन्ना की तस्वीरों का तसव्वुर करते हुए जो अब भी सही सालिम थे – अपने समन्दरी शिकार से गँधाते हुए मछुआरे, कामुक फ्रांसिस्की साधु, शुरुआती

जहाज़ियों के प्रेत और हर रंग-रूप के ज़िन्दा आदमी, इतालवी और अंग्रेज़, चीनी और यहूदी। 'प्रेम के इन्द्रजाल में फँसा आदमी,' यात्री ने सोचा, 'बड़ी आसानी से बहलाया-फुसलाया जाने वाला आदमी होता है।'

जिस बीच स्कैथेच अफ़्रीका के शृंगी प्रदेश और सोकोत्रा द्वीप से होते हुए आगे बढ़ा और मस्कत पर रसद-पानी ले कर फ़ारस के तट को छोड़, बरसाती हवाओं के सहारे दक्षिण-पूर्वी दिशा में उस स्थान के दक्षिणी तट पर जिसका ज़िक्र डॉक्टर हॉकिन्स 'गुज़ेरात' कह कर करता था, पुर्तगाली बन्दरगाह दिऊ की ओर चला, हॉक्सबैंक के श्रीमन्त सुकून-भरी नींद में डूबे रहे, हतप्रभ हॉकिन्स के अनुसार, 'इतनी शान्तिपूर्ण नींद जो साबित कर देती थी कि हॉक्सबैंक का मन साफ़ था, लिहाज़ा उनकी आत्मा कम-से-कम नीरोग और किसी भी क्षण अपने सिरजनहार से भेंट करने के लिए तैयार थी।' 'ईश्वर न करे ऐसा हो,' यात्री ने कहा। 'हाँ-हाँ, भगवान भला करे, ये अभी बने रहें,' डॉक्टर ने तत्काल सहमति प्रकट की। रोगी की शय्या के पास अपने लम्बे रतजगों के दौरान 'उचेल्लो' अकसर डॉक्टर से उसकी पुर्तगाली प्रेयसी के बारे में पूछ-ताछ करता। हॉकिन्स को इस विषय पर बात करने के लिए ज़्यादा प्रोत्साहन की ज़रूरत नहीं थी। यात्री बड़े धीरज से उस महिला की आँखों, उसके होंटों, उसके वक्ष, उसके कूल्हों, उसकी कमर, उसके नितम्बों, उसके पाँवों की स्तुतियाँ सुनता रहता। उसे यह भी पता चल गया कि प्रणयक्रीड़ा के समय वह कैसे गोपनीय शब्दों का प्रयोग करती थी, जो अब तो बिलकुल गोपनीय नहीं रह गये थे और उसने वफ़ा के वादों और सदा-सर्वदा साथ रहने की उसकी अस्फुट सौगन्धों के बारे में भी सुना। 'आह! लेकिन वह झूठी है, झूठी है,' डॉक्टर रोया। 'क्या तुम्हारे पास इसका सबूत है ?' यात्री ने पूछा और जब सजल-नयन 'जै भगवान' ने सिर हिलाते हुए कहा, 'इतना अर्सा गुज़र चुका है और अब मैं तो पूरा आदमी भी नहीं रहा, इसलिए मुझे तो बुरा-से-बुरा ही फ़र्ज़ करना है' तब 'उचेल्लो' उसे बहला-फुसला कर फिर से हँसी-ख़ुशी की हालत में ले आया। 'बहरहाल, जै भगवान की, तुम अकारण आँसू बहाते हो, जै भगवान। वह सच्ची है, मुझे पूरा यक़ीन है; और मुझे रत्ती भर शुब्हा नहीं है कि तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है; अगर तुम्हारी एक टाँग कम है, तो उसके पास प्रेम बच रहेगा, जो प्रेम उस टाँग के खाते दर्ज था उसे दूसरे अंगों के हवाले किया जा सकता है; और अगर तुम्हारी एक आँख कम है तो दूसरी आँख उसकी ख़ूबसूरती का दुगना मज़ा लेगी जिसने वफ़ादारी निभायी है और तुमसे वैसा ही प्यार करती है जैसा तुम उससे करते हो। बस! जै भगवान! मस्ती में गाओ और रोना-धोना बन्द करे।'

इस ढंग से वह हर रात जै भगवान हॉकिन्स को रुख़सत करता, उसे आश्वत करते हुए कि अगर मल्लाहों ने उसके गाने नहीं सुने तो वे व्याकुल हो जायेंगे और हर रात जब वह बेहोश श्रीमन्त के साथ अकेला होता और कुछ पल इन्तज़ार कर चुका होता, वह कप्तान के सभी रहस्यों को खोज निकालने के चक्कर में बारीक़ी से उनके कमरों की तलाशी लेता। 'जो आदमी अपना कक्ष बनवाते समय एक छिपा हुआ ख़ाना उसमें रखवाता है, उसने कम-से-कम दो या तीन रखवाये होंगे, उसने विचारा था और जब तक दिऊ के बन्दरगाह के दर्शन हुए, उसने लॉर्ड हॉक्सबैंक को इस तरह साफ़ कर दिया था जैसे खेत में मरे जानवरों को चील-कौवे साफ़ कर देते हैं, उसने तख़्तों से जड़ी दीवारों के सातों छिपे हुए ख़ाने खोज निकाले थे और उनमें रखे लकड़ी के डिब्बों के सारी क़ीमती नगीने शलाख कोरमोरानो वाले कोट की जेबों में पहुँच गये थे और सोने की सातों सिल्लियाँ भी और इसके बावजूद कोट पंख जैसा हल्का महसूस होता था, क्योंकि वेनिस का वह हरी आँखों वाला अरब उस जादुई पोशाक में रखी गयी चीज़ों को भाररहित बना देने का भेद जानता था। जहाँ तक दूसरी 'उत्कृष्ट वस्तुएँ' थीं, उनमें चोर की दिलचस्पी नहीं थी। उसने उन्हें उसी घोंसले में रहने दिया, ताकि जो भी अण्डे-बच्चे वे पैदा करना चाहें, वहीं करती रहें। लेकिन इस आलीशान लूट के बाद भी 'उचेल्लो' को तसल्ली नहीं थी, क्योंकि सबसे बड़ा ख़ज़ाना अब भी उसके हाथ नहीं लगा था। अपनी व्याकुलता को छिपाने में उसे एड़ी-चोटी का ज़ोर

लगाना पड़ रहा था। क़िस्मत ने एक दिव्य अवसर उसकी पकड़ के भीतर ला रखा था और उसको जाने देना किसी हालत में वह गवारा नहीं कर सकता था। लेकिन वह चीज़ थी कहाँ ? उसने कप्तान के कमरों की राई-रत्ती छान मारी थी और इसके बाद भी वह छिपी हुई थी। लानत है! क्या उस ख़ज़ाने पर कोई मन्तर फूँका गया था ? क्या उसे अदृश्य बना दिया गया था ताकि वह इस तरह उससे बचा रहे

दिउ के तट पर कुछ समय रुकने के बाद स्कैथैच ने तेज़ी से सूरत का रुख़ किया। इसी शहर से (जहाँ हाल ही में ख़ुद बादशाह अकबर ने दण्ड-स्वरूप दौरा किया था) लॉर्ड हॉक्सबैंक का इरादा ज़मीन के रास्ते मोगल के दरबार तक जाने का था। और जिस रात वे सूरत पहुँचे (जो तहस-नहस हुआ पड़ा था, बादशाह के ग़ुस्से से अब भी सुलगता-झुलसता) और जब जै भगवान हॉकिन्स जी भर कर गा रहा था और मल्लाह इस लम्बे समुद्री सफ़र के ख़त्म होने की ख़ुशियाँ मनाते हुए दारू के नशे में थे, जहाज़ के ऊपरी तल के नीचे खोज-बीन करने वाले को आख़िरकार उस चीज़ का पता लग ही गया, जिसकी उसे तलाश थी : आठवाँ छिपा हुआ ख़ाना, सात की जादुई संख्या से एक ज़्यादा, किसी भी चोर की उम्मीद से एक ज़्यादा। फिर एक आख़िरी कार्य के बाद वह ऊपर तल पर मौज मनाने वालों में जा मिला और उसने जहाज़ पर सवार किसी भी आदमी से ज़्यादा पिया-पिलाया और गाने गाये। चूँकि उसके अन्दर उस समय भी जगे रहने का गुण था जब दूसरे किसी आदमी की आँखें खुली न रह पातीं, भोर के पहरों में वह समय आन पहुँचा जब वह जहाज़ की छोटी नावों में से एक पर सवार हो कर चुपके से तट पर सरक जाने और किसी प्रेत की तरह हिन्दुस्तान के तूल-अर्ज़ में ग़ायब होने में सफल हो गया। इसके बहुत बाद ही जै भगवान हॉकिन्स ने हॉक्सबैंक के सरदार को अपनी आख़िरी समुद्री-शैया पर नीले होंट लिये, और हमेशा के लिए अपने ललसाते सौंफ़ की-सी महक वाले सॉसेजसरीखे अंग की ललकजनित पीड़ा से मुक्त हुआ पा कर, शोर-ग़ुल और हाय-तोबा मचायी थी। मगर तब तक 'उचेल्लो दि फ़िरेंज़े' कभी का जा चुका था, महज़ उस नाम को किसी साँप की त्यागी हुई केंचुली की तरह अपने पीछे छोड़ कर। उस नामहीन यात्री के सीने से सटा था वह ख़ज़ानों का ख़ज़ाना, एलिज़बेथ ट्यूडर की अपनी लिखावट में और उसकी निजी मुहर जड़ा वह ख़त, इंग्लैण्ड की महारानी से हिन्दुस्तान के बादशाह को, जो उसके लिए 'खुल जा सिमसिम' साबित होने वाला था, मुग़ल दरबार में दाख़िल होने के लिए उसका प्रवेश-पत्र। अब वही था इंग्लैण्ड का राजदूत।

## (३)

भोर के समय शाहों के शाह अकबर के नये 'फ़तहपुर' के, बलुई पत्थर से बने, दिलो-दिमाग़ पर छा जाने वाले महल ऐसे नज़र आते थे मानो वे लाल धुएँ के बने हों। ज़्यादातर शहर पैदा होने के साथ ही यह आभास देने लगते हैं कि वे अनन्त हैं, लेकिन फ़तहपुर सीकरी हमेशा एक मृग मरीचिका, एक सराब सरीखा नज़र आनेवाला शहर था। जैसे-जैसे सूरज अपने शिखर की ओर बढ़ता, दिन की गर्मी का दुर्द्धर्ष हथौड़ा इन्सान के कानों को दूसरी सभी आवाज़ों के लिए बहरा बनाते हुए, पत्थर की पटियों पर बजने लगता - हवा को किसी भयभीत चिंकारा-हिरन की तरह थरथराने पर मजबूर करते हुए और होशमन्दी और बेख़ुदी के बीच की, कल्पना प्रसूत और वास्तविक के बीच की सीमा को धुँधलाते हुए।

बादशाह भी बेख़ुदी की चंगुलों से बरी नहीं था। उसके महलों में बेगमें प्रेतों की तरह तिरती फिरती थीं, राजपूत और तुर्की सुल्तानाएँ लुका-छिपी खेलती रहती थीं। इनमें से एक शाही शख़्सियत ऐसी थी जिसका कोई वजूद ही नहीं था। वह एक काल्पनिक पत्नी थी जिसे अकबर ने मन-ही-मन उसी तरह गढ़ लिया था जैसे बच्चे मनमाने संगी-साथी कल्पित कर लेते हैं और ढेरों ज़िन्दा, भले ही तिरती-फिरती, संगिनियों की मौजूदगी के बावजूद, बादशाह का ख़याल था कि दरअसल जीती-जागती रानियाँ काल्पनिक थीं और वह अशरीरी, अस्तित्वहीन प्रियतमा ही असली थी, वास्तविक थी। उसने उसे एक नाम भी दे दिया था - जोधा - और किसी आदमी की जुर्रत नहीं थी कि बादशाह की उदूली कर सके। ज़नानख़ाने के अलग-थलग संसार में, उसके महल के रेशमी गलियारों में, जोधा का असर और उसकी ताक़त बढ़ती गयी। तानसेन उसके लिए गीत रचता और चित्रशाला में उसकी ख़ूबसूरती को चित्रों और छन्दों से उजागर किया जाता। उस्ताद चित्रकार अब्दुस्समद ईरानी ने उसकी तस्वीर ख़ुद उकेरी थी। बिना कभी उसके चेहरे को देखे, उसे एक सपने की स्मृति से चित्रित किया था, और जब बादशाह ने उस्ताद के शाहकार को देखा तो उन्होंने काग़ज़ से पन्ने पर दमकते हुए सौन्दर्य की सराहना में ताली बजायी। 'आपने इन्हें बिलकुल ज़िन्दा-जावेद मुजस्समा बना दिया है,' वह ख़ुशी से चीख़ा और अब्दुस्समद ने शरीर को ढीला छोड़ कर राहत की साँस ली और यह महसूस करना बन्द कर दिया मानो उनका सिर उनकी गरदन से बहुत नाज़ुक तौर पर जुड़ा हुआ है; और बादशाह की चित्रशाला के उस्ताद की कल्पना के इस चमत्कार की नुमाइश के बाद सारे दरबार ने जान लिया कि जोधा वास्तविक है, और बादशाह के सबसे आला दरबारियों, नवरत्नों, ने भी न सिर्फ़ उसके वजूद को, बल्कि उसके हुस्न, उसकी सूझ-बूझ, उसकी चाल की नज़ाकत और आवाज़ की लताफ़त को तस्लीम कर लिया। अकबर और जोधाबाई! वाह! ज़माने की सबसे बेमिसाल प्रेम कहानी।

शहर आख़िरकार बन कर तैयार हो गया, बादशाह की चालीसवीं सालगिरह के ऐन मौक़े पर। उसकी तामीर में बारह तपिश-भरे साल लगे थे, लेकिन एक लम्बे समय तक बादशाह को यही महसूस कराया गया था कि वह बिना किसी कोशिश के, साल-दर-साल, मानो जादू से ऊपर को उठता चला गया था। उसके तामीरात के वज़ीर ने नयी राजधानी में बादशाह की मौजूदगियों के दौरान तामीर के किसी काम को जारी रखने की

इजाज़त नहीं दी थी। जब-जब बादशाह शहर में रिहाइश करता पत्थर तराशने वालों के औज़ार ख़ामोशी में डूब जाते, बढ़ई कीलें ठोंकना बन्द कर देते, मुसव्विर, नक़्क़ाश, परदे टाँगने वाले, चिलमन-तराश, सब आँख से ओझल हो जाते। फिर सब कुछ, कहा जाता है, नर्मो-नाज़ुक मस्ती में डूब जाता। इजाज़त सिर्फ़ हँसी-ख़ुशी की आवाज़ों के सुनाई देने की थी। नाचनेवालियों की पायलों के घुँघरू अपनी मीठी-मधुर ध्वनि बिखेरते, फ़व्वारे कलकल करते और उस्ताद तानसेन के संगीत के मद्धम सुर हवा में तैरते रहते। बादशाह के कानों में शायरी की फुसफुसाहटें आतीं और जुमेरात के दिन पचीसी आँगन में काफ़ी देर तक हौले-हौले अलस-भाव से खेल चलता जिसमें फ़र्श पर बनी बिसात के चौकोर ख़ानों में कनीज़ों और बाँदियों को ज़िन्दा मोहरों की तरह इस्तेमाल किया जाता। परदों से ढँकी दुपहरियों में डोलते पंखों के नीचे इश्क़ो-मुहब्बत के लिए सुकून हाज़िर होता। शहर की भोग-विलास में डूबी ख़ामोशी के पीछे बादशाह के जाहो-जलाल का उतना ही हाथ था, जितना दिन की गरमी का।

कोई भी शहर सिर्फ़ महलों ही से बना नहीं होता। पत्थर के साथ-साथ लकड़ी और मिट्टी और गोबर और ईंटों से बना असली शहर, लाल पत्थर की उस आलीशान कुर्सी के नीचे दुबका हुआ था जिस पर शाही महल खड़े थे। इस शहर के मुहल्ले जात-पाँत के साथ ही पेशे से भी तय हुए थे। यह सुनारों की गली थी, वहाँ गर्म-फाटकों वाले, खनखनाते हथियारख़ाने और उधर, उस तीसरी गली में मनिहारों, चूड़ीगरों की दुकानें और बजाजा था। पूरब की तरफ़ हिन्दुओं की आबादी थी और उसके परे, शहर की फ़सीलों के गिर्द चकफेरा लेते हुए ईरानी टोले और उसके आगे तूरानियों का इलाक़ा और उसके भी आगे जुम्मा मस्जिद के भीमकाय दरवाज़े के आस-पास उन मुसलमानों के घर जो हिन्दुस्तानी पैदाइश के थे। इर्द-गिर्द के देहाती इलाक़े में दरबारियों की हवेलियाँ, चित्रशाला और लेखन-कक्ष, जिसकी ख्याति पहले ही दूर-दूर तक फैल चुकी थी, और एक मण्डप संगीत के लिए और दूसरा नृत्य के प्रदर्शनों के लिए नगीनों की तरह जड़े हुए थे। नीचे की इन सीकरियों में निठल्लेपन के लिए बहुत कम वक़्त था और जब बादशाह लड़ाइयों से घर लौटता था तो शहर के कच्चे घरों वाले हिस्से में ख़ामोश रहने का हुक्म दमघोंटू-सा महसूस होता। मुर्ग़ों को हलाल करते वक़्त बादशाह के आराम में ख़लल पड़ने के डर से उनकी चोंचें बाँध दी जातीं। गाड़ी का चक्का अगर चरर-मरर करता तो गाड़ीवान को कोड़े पड़ सकते थे और अगर वह कोड़े खाते वक़्त चिल्लाता तो सज़ा और भी सख़्त हो सकती थी। बच्चे जनती औरतें अपनी चीख़ें रोक लेतीं और बाज़ार में गूँगेपन की नुमाइश एक क़िस्म का पागलपन जान पड़ता। 'बादशाह जब यहाँ होते हैं तो हम सब पागल हो जाते हैं,' लोग कहते और फिर जल्दी से जोड़ते, 'ख़ुशी से,' क्योंकि हर जगह जासूस और ग़द्दार मौजूद थे। कच्चा शहर अपने बादशाह से मुहब्बत करता था, इस बात पर ज़ोर देता था कि वह मुहब्बत करता था, बिना अल्फ़ाज़ के ज़ोर देता था, क्योंकि अल्फ़ाज़ उस रेशे यानी आवाज़ से बने होते जिसकी मनाही थी। जब बादशाह एक बार फिर अपनी मुहिम पर रवाना हो जाता - गुजरात और राजस्थान, कश्मीर और काबुल की फ़ौजों के ख़िलाफ़ अपनी अन्तहीन (हालाँकि हमेशा विजयी) लड़ाइयों पर-तब ख़ामोशी का यह क़ैदख़ाना खुल जाता, और तुरहियाँ फूट पड़तीं, और नारे, और लोग आख़िरकार एक-दूसरे को वह सब कुछ बताने के क़ाबिल हो जाते जो उन्हें महीने-दर-महीने अनकहा रखे रहने पर मजबूर होना पड़ा था। *मुझे तुमसे प्यार है। मेरी माँ गुज़र गयी। तुम्हारी दाल बड़ी स्वाद है। अगर तुमने वो पैसे मुझे वापस नहीं दिये जो तुमने उधार लिये थे, तो मैं तुम्हारी बाँहें कुहनियों पर से तोड़ दूँगा। मेरी जान, मुझे भी तुमसे प्यार है।* सब कुछ।

कच्चे शहर की ख़ुशक़िस्मती थी कि फ़ौजी मामलों की वजह से अकबर को अकसर बाहर रहना पड़ता, हक़ीक़तन वह ज़्यादातर समय बाहर रहा था और उसकी ग़ैरहाज़िरी में झुण्ड में बसे ग़रीबों का शोर-शराबा और

तामीर में जुटे बेलगाम मज़दूरों का हल्ला-गुल्ला बेबस और लाचार रानियों को रोज़ाना तंग करता। रानियाँ एक-दूसरे की बग़ल में लेटी कराहतीं, और एक-दूसरे का ध्यान बँटाने के लिए वे जो करतीं, पर्दों से ढँके अपने ज़नानख़ाने में वे एक-दूसरे में कैसा मनोरंजन हासिल करतीं, उसे यहाँ बयान नहीं किया जायेगा। सिर्फ़ काल्पनिक रानी बेदाग़ बनी रही, और उसी ने अकबर को बताया कि उसके घर आने पर उसे सुकून बख़्शने के लिए उसके अहलकारों के ज़रूरत से ज़्यादा जोशीलेपन की वजह से लोग कैसी-कैसी तकलीफ़ें झेल रहे थे। जैसे ही बादशाह को यह पता चला उसने उस हुक्म को रद्द कर दिया, वज़ीरे-तामीरात के ओहदे पर एक कम रूखे शख़्स के तैनात किया और ख़ुद घोड़े पर सवार हो कर अपनी दबी-कुचली रियाया की गलियों से यह चिल्लाते हुए गुज़रने पर हठ किया कि, 'जितना चाहो शोर मचाओ लोगो! शोर ज़िन्दगी है और ख़ूब शोर होना इस बात की निशानी है कि ज़िन्दगी अच्छी है। हम सब के पास ख़ामोश रहने का बहुत वक़्त होगा जब हम हिफ़ाज़त से मर चुके होंगे।' शहर में ख़ुशी का गुल-गपाड़ा फूट पड़ा। उसी दिन से यह साफ़ हो गया कि एक नये क़िस्म का बादशाह गद्दी पर बैठा था और दुनिया में कुछ भी पहले जैसा नहीं रहने वाला था।

◆◆◆◆◆

आख़िरकार, देश में शान्ति थी, लेकिन बादशाह की तबियत को कभी चैन नहीं था। वह अभी-अभी अपनी पिछली मुहिम से लौटा था, उसने सूरत के सरकश को सबक़ सिखा दिया था, लेकिन कूच करने और जंग लड़ने के लम्बे-लम्बे दिनों के दौरान उस का दिमाग़ दार्शनिक और भाषाई समस्याओं से उतना ही जूझता रहा जितना फ़ौजी मसलों से। बादशाह अबुल-फ़तह जलालुद्दीन मुहम्मद, शाहों का शाह, बचपन में जिसे अकबर यानी महान के नाम से जाना जाता था और बाद में पुनरुक्ति दोष के बावजूद 'अकबर महान' के रूप में, महान महामहिम, अपनी महिमा में महान, दुगना महान, इतना महान कि उसकी उपाधि का दोहराव न सिर्फ़ उचित था, बल्कि उसकी महिमा के महत्व को व्यक्त करने के लिए ज़रूरी भी - यह अज़ीमुश्शान मुग़ल, धूलि-धूसरित, युद्ध-श्लथ, विजयी, विचार-मग्न, प्रच्छन्न रूप से मोटापे को अग्रसर, मोहमुक्त, मूँछधारी, काव्यात्मक, अति कामुक और परम परिपूर्ण सम्राट, जो कुल मिला कर इतना *अधिक* जान पड़ता था कि वह कैसे अत्यन्त महिमावान, अत्यन्त जगत-व्यापी और अकेला मानवीय व्यक्तित्व था - बादशाह के नाम पर यह सर्वव्यापी प्लावन, यह दुनियाओं को निगल जाने वाला, यह अनेक सिरों वाला राक्षस जो अपने बारे में प्रथम पुरुष बहुवचन में बात करता था - घर वापसी की अपनी लम्बी, दुष्कर यात्रा के दौरान, जिसमें उसके पराजित दुश्मनों के सिर मिट्टी के मुहरबन्द मर्तबानों में डूबते-उतराते उसका साथ दे रहे थे - प्रथम पुरुष एकवचन की सम्भावनाओं के बारे में विचार कर रहा था - 'मैं' के बारे में।

अन्तहीन दिनों तक धीमी रफ़्तार से घोड़ों पर की गयी यात्रा विचारशील व्यक्ति में कई अलसाये हुए ख़याल जगाती है और घोड़े पर सवारी करने के दौरान बादशाह संसार की अनवरत परिवर्तनशीलता, सितारों के आकार, अपनी पत्नियों के उरोजों और ईश्वर के स्वभाव के बारे में सोचता रहता। साथ ही, आज, आत्मा और उसके तीन पुरुषों के बारे में यह व्याकरण-सम्बन्धी सवाल - व्यक्ति के प्रथम, द्वितीय और अन्य, एकवचन और बहुवचन के बारे में। उसने -अकबर ने - कभी अपने बारे में 'मैं' कह कर बात नहीं की थी, एकान्त में भी नहीं, ग़ुस्से में या सपने देखते समय भी नहीं। वह 'हम' था -इसके अलावा हो भी क्या सकता था ? वह 'हम' का अवतार था, परिभाषा थी। उसका जन्म ही बहुत्व में, बहुलता में, बहुवचन-सम्पन्नता में हुआ था। जब वह

कहता 'हम,' तो स्वाभाविक और वास्तविक रूप में उसका अर्थ होता था अपनी सारी रियाया, अपने सारे शहर और ज़मीनें और नदियाँ और पर्वत और झीलें, उनके साकार रूप, उनके अवतार, साथ ही अपनी सरहदों के भीतर के सारे जानवर और पौधे और पेड़ और वे चिड़ियाँ भी जो ऊपर आसमान में उड़ती थीं; और तीखे डंक मारने वाले गोधूलि बेला के मच्छर और वे अनाम दानव जो पाताल लोक की अपनी माँदों में चीज़ों की जड़ों को कुतरते रहते थे; उसका मतलब होता था कि वह अपनी सारी विजयों का योग है, उसी में उसके मारे गये या सिर्फ़ शान्त किये गये विरोधियों के चरित्र, योग्यताएँ, इतिहास, शायद उनकी आत्माएँ भी, समाहित हैं; और इसके साथ ही उसका अभिप्राय था कि वह अपनी रियाया के अतीत और वर्तमान की पराकाष्ठा है और उसके भविष्य का संचालक भी।

यह 'हम,' बादशाह होने का मतलब था – लेकिन आम लोग भी बेशक, उसने अब न्याय की दृष्टि से और बहस के उद्देश्य से ख़ुद को सोचने की इजाज़त दी, कभी-कभी अपने बारे में बहुवचन में सोचते होंगे।

क्या वे ग़लत थे ? या (ओ, ग़द्दार, ख़याल) वही ग़लत था ? शायद दुनिया में प्राणी, कोई भी प्राणी, होने का मतलब ही था – समुदाय-रूपी-निजता का यह विचार; ऐसा अस्तित्व, आख़िरकार, दूसरे अस्तित्वों के बीच अनिवार्यतः एक अस्तित्व होना था, सारी चीज़ों के अस्तित्व का एक हिस्सा। शायद बहुलता अकेले सम्राट का विशेषाधिकार नहीं थी, शायद यह अन्ततः उसका दैवी अधिकार भी नहीं था। कोई आगे तर्क दे सकता था कि चूँकि किसी सम्राट का मनन-चिन्तन, अपेक्षाकृत कमतर और अनगढ़ रूप में निस्सन्देह उसकी प्रजा के चिन्तन में प्रतिबिम्बित होता है, इसलिए यह लाज़िमी था कि जिन औरतों और आदमियों पर वह हुकूमत करता था, उन्हें भी अपना बोध 'हम' के तौर पर हो। वे शायद ख़ुद को अपने बच्चों, माँओं, मौसियों, मालिकों, साथी उपासकों, सहकर्मियों, बिरादरियों और दोस्तों सहित मिल कर बने एक से अधिक अस्तित्वों के रूप में देखते थे। वे भी अपने आप को बहुलता में देखते थे, एक स्वत्व जो उनके बच्चों का पिता था, दूसरा जो अपने माता-पिता की सन्तान था; वे ख़ुद को घर में अपनी पत्नियों के साथ अलग महसूस करते और अपने मालिकों के साथ अलग – संक्षेप में, वे सब-के-सब अस्तित्वों के बोरे थे, अनेकता से ठुँसे हुए, जैसे वह था। तब क्या शासक और शासित के बीच कोई बुनियादी फ़र्क नहीं था ? और अब उसके मूल प्रश्न ने एक नये और चौंकाने वाले रूप में फिर से अपनी दावेदारी पेश की : अगर उसके बहु-अस्तित्वों वाले प्रजाजन, ख़ुद को बहुवचन की बजाय एकवचन में ग्रहण करने में सफल थे, तो क्या वह भी एक 'मैं' हो सकता था ? क्या कोई 'मैं' हो सकता था जो महज़ अपना आप हो ? क्या ऐसे नंगे, अकेले 'मैं' पृथ्वी के भीड़-भरे 'हमों' के नीचे दफ़्न थे ?

इस सवाल ने, जब वह अपने सफ़ेद घोड़े पर सवार घर लौट रहा था, निर्भीक, अपराजित और, यह मानना पड़ेगा, मोटापे की ओर अग्रसर, उसे डरा दिया और जब यह सवाल रात को उसके दिमाग़ में कौंधता, वह आसानी से सो न पाता। जब वह दोबारा अपनी जोधा को देखेगा तो उसे क्या कहना चाहिए ? अगर वह उससे सीधे-सीधे कहे, 'मैं आ गया' या 'मैं हूँ', तो क्या वह पलट कर उसे उस द्वितीय पुरुष एकवचन में, *तू* कह कर, सम्बोधित करने क़ाबिल हो पायेगी जो बच्चों, प्रेमियों और देवताओं के लिए सुरक्षित होता है ? और इसका मतलब क्या निकलेगा ? कि वह उसका बच्चा था, देवता समान था या महज़ ऐसा प्रेमी था जिसके बारे में उसने भी सपना देखा था, जिसे वह भी उतने ही चाव से सपने द्वारा अस्तित्व में लायी थी जितने चाव से उसने जोधा को सपने से साकार किया था ? क्या वह नन्हा-सा शब्द, *तू*,भाषा के सबसे उत्तेजक शब्द के रूप में प्रकट होने वाला था ? 'मैं' उसने बेआवाज़ ढंग से अभ्यास किया। *यह रहा 'मैं'। 'मैं' तुम्हें प्यार करता हूँ। 'मेरे' पास आओ।*

एक आख़िरी फ़ौजी टकराव ने घर-वापसी के रास्ते पर उसके विचार-प्रवाह को भंग कर दिया। एक और सरकश राजा जिसे सबक़ सिखाना था। रास्ते से थोड़ा हट कर काठियावाड़ अन्तरीप में कूच नाहीन के हठी राणा को दबाने के लिए एक धावा - बड़े मुँह और उससे भी बड़ी मूँछों वाला युवक (बादशाह को अपनी मूँछों पर नाज़ था और वह प्रतिद्वन्द्वियों को पसन्द नहीं करता था), ऐसा सामन्ती शासक जो बेतुकेपन की हद तक आज़ादी की बातें करता था। आज़ादी किस व्यक्ति से और किस चीज़ से, बादशाह ने मन-ही-मन हुंकार भरी। आज़ादी बच्चों की कल्पना थी, औरतों के खेलने के लिए एक खेल। कोई आदमी कभी आज़ाद नहीं हो सकता था। उसकी फ़ौज गिर वन के पेड़ों के बीच से किसी ख़ामोश रफ़्तार महामारी की तरह बढ़ रही थी, और कूच नाहीन के छोटे-से दयनीय क़िले ने पेड़ों की सरसराती फुनगियों में मौत को आता देख, ख़ुद अपने बुर्ज तोड़ दिये, समर्पण का झण्डा लहरा दिया और दीनता से दया की भीख माँगी। अक्सर, अपने पराजित विरोधियों के सिर क़लम करने की बजाय बादशाह उनकी किसी बेटी से शादी कर लेता था और अपने पराजित ससुर को कोई काम दे देता था। सड़ती हुई लाश से परिवार का एक नया सदस्य बेहतर है। लेकिन इस बार उसने चिड़चिड़ा कर उद्दण्ड राणा की मूँछें उसके ख़ूबसूरत चेहरे से उखाड़ ली थीं और उस दुर्बल स्वप्नद्रष्टा को नुमाइशी टुकड़ों में काट डाला था - ख़ुद, अपनी तलवार से, ठीक जैसे उसके दादा ने किया होता और फिर वह काँपने और मातम करने के लिए अपनी रिहाइशगाह में लौट गया था।

बादशाह की आँखें बड़ी-बड़ी और तिरछी थीं और अनन्तता को यों निहारती थीं जैसे सपनों में डूबी हुई कोई युवती देखे या ज़मीन की खोज में कोई नाविक। उसके होंट भरे-भरे थे और किसी मुँह बिचकाती औरत की मानिन्द बाहर को निकले हुए थे। लेकिन इन लड़कियों सरीखे लक्षणों के बावजूद वह मर्दानगी का भरपूर नमूना था। किशोरावस्था में उसने अपने हाथों से एक मादा बाघ को मारा था और फिर उस कारनामे से हैरान-परेशान हो कर उसने हमेशा-हमेशा के लिए गोश्त न खाने की क़सम खा ली थी और शाकाहारी बन गया था। एक मुस्लिम शाकाहारी, एक योद्धा जो हमेशा शान्ति चाहता था, एक दार्शनिक-सम्राट, शब्दों में एक अन्तर्विरोध। ऐसा था वह, इस देश का अब तक का महानतम शासक।

युद्ध के बाद के अवसाद में, जैसे-जैसे साँझ ख़ाली मुर्दों पर घिरी, ख़ून में पिघलते टूटे हुए क़िले के नीचे, नन्हे-से झरने की बुलबुल सरीखी आवाज़ से सुनायी देने वाले फ़ासले पर - *बुल-बुल, बुल-बुल* वह गा रहा था - बादशाह अपने किमख़ाब के ख़ेमे में पानी मिली शराब पी रहा था और अपनी रक्त-रंजित वंश-परम्परा पर अफ़सोस कर रहा था। वह अपने ख़ूँख़ार पुरखों-सरीखा नहीं होना चाहता था, हालाँकि उसके पुरखे इतिहास के महानतम लोग थे। वह लुटेरे अतीत के उन नामों के बोझ-तले दबा महसूस करता था, जिन नामों से उसका नाम इन्सानी ख़ून के झरनों में झरता हुआ उस तक आया था : उसके दादा बाबर, फ़रग़ाना के सरदार, जिन्होंने इस नये राज्य को जीता था, मगर उसे हमेशा नापसन्द किया था, बहुत ज़्यादा दौलत और बहुत अधिक देवताओं वाला यह 'हिन्दुस्तान,' सही और सुखद शब्दों के अप्रत्याशित गुणों वाला बाबर जो लड़ाई का यन्त्र था और बाबर से पहले ऑक्सस नदी के पार मध्य एशिया और मंगोलिया के ख़ूनी बादशाह और सबसे ऊपर प्रबल तेमूजिन - जेंगीज़, चंगेज़, जेंगिस या चिंगिस क़ान -जिसकी वजह से उसे, अकबर को, *मुग़ल* का नाम स्वीकार करना पड़ा, *मंगोल* बनना पड़ा जो वह था नहीं या कम-से-कम जो वह ख़ुद को महसूस नहीं करता था। वह महसूस करता था कि वह...*हिन्दुस्तानी* है। उसका जत्था न सुनहरी था, न नीला, न सफ़ेद। 'जत्था' लफ़्ज़ ही उसके सुरुचिपूर्ण कानों को भद्दा, घिनौना, घटिया लगता था। वह जत्थे नहीं चाहता था। वह अपने शिकस्त-खाये दुश्मनों की आँखों में पिघली चाँदी नहीं डालना चाहता था, न उन्हें उस तख़्त के नीचे दबा कर मार डालना जिस पर बैठ कर वह भोजन कर रहा हो। वह युद्ध से थक चुका था। उसे याद था कि बचपन में उसके

उस्ताद, एक ईरानी मीर ने उसे बताया था कि आदमी ख़ुद अपने साथ सुकून के साथ रह सके इसके लिए ज़रूरी था वह बाक़ी सब के साथ सुकून से रहे। सुल्हे-कुल, पूरी शान्ति। कोई ख़ान ऐसे ख़याल को समझ नहीं सकता था। वह एक ख़ानत नहीं चाहता था, एक देश चाहता था।

महज़ तिमुजिन ही का सवाल नहीं था। उसकी रगों में उस आदमी का भी ख़ून दौड़ रहा था जिसका नाम ही लोहा था और जिसका वह सीधा वंशज था। उसके पुरखों की ज़बान में लोहे के लिए जो लफ़्ज़ इस्तेमाल होता था, वह तैमूर था। तैमूर-ए-लंग, लँगड़ा लौह पुरुष, जिसने दमिश्क और बग़दाद को ध्वस्त कर दिया, जिसने दिल्ली को खंडहर बना कर छोड़ दिया, जहाँ पचास हज़ार प्रेत मँडरा रहे थे। अगर तैमूर उसका पूर्वज न होता तो अकबर को अच्छा लगता। उसने तैमूर की ज़बान - चग़तई - भी बोलनी छोड़ दी थी, जिसका नाम चंगेज़ के एक बेटे के नाम पर पड़ा था, और इसकी बजाय पहले फ़ारसी अपना ली थी और बाद में फ़ौजी लश्कर की वह दोग़ली मिली-जुली ज़बान - उर्दू - भी, जिसमें आधा दर्जन आधी समझी जाने वाली भाषाएँ सीटियाँ-सी बजाती हुईं गिटपिट करती थीं और जिन्होंने सब को हैरतज़दा करते हुए एक ख़ूबसूरत नयी आवाज़ पैदा की थी : फ़ौजियों के मुँह से पैदा होने वाली शायरों की ज़बान।

युवा, छरहरा और साँवला कूच नाहीन का राणा, मूँछ-रहित ख़ूनसना चेहरा लिये अकबर के पैरों में घुटने टेक कर वार का इन्तज़ार कर रहा था। 'इतिहास अपने को दोहराता है,' उसने कहा। 'तुम्हारे दादा ने सत्तर साल पहले मेरे दादा की हत्या की थी।'

'हमारे दादा,' बादशाह ने रिवाज के मुताबिक़ राजसी बहुवचन का इस्तेमाल करते हुए कहा, क्योंकि यह एकवचन के साथ तजरुबा करने का वक़्त नहीं था, यह नीच उस तजरुबे को देखने की सहूलत दिये जाने के क़ाबिल नहीं था, 'वे शायराना ज़बान वाले बर्बर थे। इसके बरअक्स हम बर्बरों की तारीख़ और बर्बरों की-सी जंगी महारतवाले शायर हैं - जिस बात से हमें नफ़रत है। इस तरह साबित होता है कि तारीख़ ख़ुद को नहीं दुहराती, आगे की तरफ़ बढ़ती है और इन्सान में बदलने की क़ूवत है।'

'जल्लाद के मुँह से यह फ़िकरा अजीब लगता है,' युवा राणा ने आहिस्ता से कहा, 'मगर मौत से बहस करना बेकार है।'

'तुम्हारा वक़्त आ गया है,' बादशाह ने हामी भरी। 'लिहाज़ा जाने से पहले हमें सच-सच बताओ कि पर्दे की उस तरफ़ तुम कैसी जन्नत से रू-ब-रू होने की उम्मीद रखते हो ?' राणा ने अपना क्षत-विक्षत चेहरा उठाया और बादशाह से नज़रें मिलायी। 'स्वर्ग में *पूजा* और तर्क, इन शब्दों का अर्थ एक है,' उसने कहा। 'सर्वशक्तिमान कोई तानाशाह नहीं है। ईश्वर के घर में सभी आवाज़ों को अपनी इच्छा के अनुसार बोलने की आज़ादी है, और यही उनकी पूजा-अर्चना का तरीक़ा है।' वह एक खिझाने वाला युवक था, जो ख़ुद को दूसरों से अधिक पवित्र समझने का आदी था, इसमें रत्ती भर शक नहीं था, लेकिन अपनी खीझ के बावजूद अकबर द्रवित हुआ। 'हम तुमसे वादा करते हैं,' बादशाह ने कहा, 'कि हम वह इबादतगाह यहाँ ज़मीन पर बनायेंगे।' फिर एक नारा लगाते हुए - *अल्लाहू अकबर*, अल्लाह अकबर है या शायद अकबर अल्लाह है - उसने उस ओछे दम्भी बेवक़ूफ़ का गुस्ताख़, नसीहत-भरा और इसीलिए अचानक ग़ैर-ज़रूरी सिर क़लम कर दिया।

राणा को मारने के बाद की घड़ियों में बादशाह को अकेलेपन का उसका परिचित प्रेत सताने लगा। जब भी कोई आदमी उससे बराबरी की हैसियत से बात करता था, वह पगला जाता था, और यह एक दुर्गुण था, वह इस बात को समझता था, राजा का ग़ुस्सा हमेशा एक दोष था, नाराज़ बादशाह उस ईश्वर की तरह था जो ग़लतियाँ करता था। और यहाँ फिर उसके भीतर एक अन्तर्विरोध था। न केवल वह एक बर्बर दार्शनिक और रोंदू हत्यारा था, बल्कि जी-हुज़ूरी और ख़ुशामद का आदी एक अहंकारी भी था जो इसके बावजूद दूसरी दुनिया

के लिए तरसता था, ऐसी दुनिया जिसमें उसे हू-ब-हू वह दूसरा आदमी मिल सके जो उसके बराबर हो, जिससे वह भाइयों की तरह मिल सके, जिसके साथ वह आज़ादी से बात कर सके, सीखे और सिखाये, आनन्द लेते और देते हुए, ऐसी दुनिया जिसमें वह विजय की सालस-लालस तृप्ति को विचार-विमर्श के अपेक्षाकृत सुकोमल, मगर अधिक थकाऊ, सुख के लिए त्याग सके। क्या ऐसी दुनिया का कोई वजूद था भी ? उस तक किस रास्ते से पहुँचना सम्भव था ? क्या ऐसा कोई आदमी दुनिया में कहीं था या कहीं उसने उसे अभी-अभी मार तो नहीं डाला था ? अगर यह मूँछ वाला राणा ही वह आदमी रहा हो तो ? क्या उसने अभी-अभी उसी आदमी की हत्या तो नहीं कर दी थी, जिसे वह प्यार कर पाता ? बादशाह के विचार मदमत्त और भावुक होने लगे, उसकी आँखें नशीले आँसुओं से धुँधलाने लगीं।

जो आदमी वह बनना चाहता है, वह किस तरह बन सके ? *अकबर*, महान, अज़ीम ? कैसे ?

बातें करने के लिए कोई नहीं था। उसने अपने बहिरबण्ड सेवक भक्तिराम जैन को अपने ख़ेमे के बाहर चले जाने का हुक्म दिया था, ताकि वह चैन से पी सके। ऐसा सेवक, जो अपने मालिक की बड़बड़ाहट न सुन सके, एक वरदान था; लेकिन भक्तिराम जैन अब उसके होंटों को पढ़ना सीख गया था जिसने उसे बाक़ी सब की तरह कनसुई लेने वाला बनाते हुए उसकी क़ीमत काफ़ी घटा दी थी। *बादशाह ख़ब्ती* है । वे कहते थे : सब यह बात कहते थे। उसके सिपाही, उसके लोग, उसकी बेगमें। शायद भक्तिराम जैन भी ऐसा ही कहता था। वे इसे उसके मुँह पर नहीं कहते थे, क्योंकि वह देव सरीखा आदमी था और प्राचीन गाथाओं से निकले किसी शूरवीर की तरह एक पराक्रमी योद्धा था और वह शाहों का शाह भी था, और अगर ऐसा शख़्स थोड़ा-सा ख़ब्ती होना चाहे तो वे कौन थे इस पर बहस करने वाले। बहरहाल, बादशाह पागल नहीं था। बादशाह को सिर्फ़ होने पर ही तसल्ली नहीं थी। वह बनने की कोशिश में था।

ठीक है। वह मृत काठियावाड़ी राजकुमार को दिये गये अपने वचन को पूरा करेगा। अपनी फ़तह की ख़ुशी में बनवाये गये अपने शहर के बीचों-बीच वह एक इबादतगाह बनवायेगा, बहस-मुबाहिसे की एक जगह, जहाँ हर विषय पर कोई भी आदमी किसी भी आदमी से कुछ भी कह सकेगा, ईश्वर के न होने से ले कर बादशाहों के उन्मूलन तक। उस घर में वह ख़ुद को विनम्रता सिखायेगा। नहीं, अब वह अपने साथ नाइन्साफ़ी कर रहा था। 'सिखायेगा' नहीं। बल्कि वह ख़ुद को उस विनम्रता की याद दिलायेगा और फिर से प्राप्त करने की कोशिश करेगा जो उसके हृदय की गहराई में पहले से मौजूद थी। यह विनम्र विनयी अकबर शायद उसका सबसे अच्छा रूप था, जलावतनी में गुज़रे उसके बचपन की परिस्थितियों द्वारा निर्मित, अब वयस्क भव्यता से मण्डित, मगर इसके बावजूद हर हाल में मौजूद; वह निजता जो विजय में नहीं, बल्कि पराजय में जन्मी थी। आजकल तो सब कुछ कामयाबी-ही-कामयाबी थी, लेकिन बादशाह को शिकस्त का पूरा इल्म था। शिकस्त उसका बाप थी। उसका नाम था हुमायूँ।

बादशाह को अपने बाप के बारे में सोचना पसन्द नहीं था। उसके बाप ने बहुत ज़्यादा अफ़ीम पी थी, अपनी सल्तनत खो दी थी, सिर्फ़ तभी उसे वापस हासिल किया था जब उसने शिया होने का नाटक किया था (और कोहेनूर हीरा दे दिया था) ताकि फ़ारस का बादशाह उसे लड़ने के लिए एक फ़ौज मुहैया करा सके, और फिर अपना तख़्त दोबारा हासिल करने के लगभग फ़ौरन बाद कुतुबख़ाने की सीढ़ियों से गिर कर मर गया था। अकबर अपने बाप को नहीं जानता था। वह ख़ुद चौसा में हुमायूँ की शिकस्त के बाद सिन्ध में पैदा हुआ था जब शेरशाह उस तख़्त पर बैठा, जहाँ हुमायूँ को बैठना चाहिए था लेकिन इस क़ाबिल नहीं था, और फिर तख़्त

से उतारा गया बादशाह अपने बेटे को छोड़ कर चटपट फ़ारस की तरफ़ दौड़ गया। *अपने चौदह महीने के बेटे को।* जिसे उसके बाप के भाई और दुश्मन, कन्दहार के चचा अस्करी ने पाया और पाला, बेलगाम चचा अस्करी जिसने ख़ुद अकबर को मार दिया होता अगर वह कभी उसके इतना नज़दीक पहुँच सकता, जो वह नहीं कर पाया, क्योंकि उसकी बेगम हमेशा रास्ते में खड़ी थी।

अकबर ज़िन्दा रहा, क्योंकि उसकी चाची चाहती थी वह ज़िन्दा रहे।

और कन्दहार में उसे जीवित बचे रहने के बारे में सिखाया गया, लड़ने और मारने और शिकार करने के बारे में, और उसने बहुत कुछ बिना सिखाये सीखा, मसलन अपनी हिफ़ाज़त ख़ुद करने और ज़बान सँभाल कर बात करने और ग़लत बात न कहने के बारे में, ऐसी बात जो उसकी मौत का सबब बन जाये। हारे हुओं की गरिमा के बारे में, हारने के बारे में, और इस बारे में कि कैसे हार को स्वीकार करने पर आत्मा की सफ़ाई हो जाती है, और त्याग के बारे में, अपनी इच्छा को बहुत कस कर पकड़े रहने के फन्दे से बचने के बारे में, और आम तौर से क़ुर्बानी के बारे में, और ख़ास तौर पर पिताहीनता के बारे में, पिताओं की हीनता के बारे में, पिताहीनों की हीनता के बारे में,और उन लोगों के मुक़ाबले जो बढ़ कर हैं, कमतर लोगों की सबसे उम्दा हिफ़ाज़ती हिकमतों के बारे में : अन्तरोन्मुखता, सूझ-बूझ, चालाकी, विनम्रता और इर्द-गिर्द नज़र रखने की ख़ूबी । कमतरी के कई सबक। वह कमतरी जहाँ से बढ़ना शुरू हो सके।

ख़ैर, ऐसी चीज़ें भी थीं जिन्हें उसको सिखाने का ख़याल किसी को नहीं आया था और जिन्हें वह कभी नहीं सीखने वाला था। 'हम हिन्दुस्तान के बादशाह हैं, भक्तिराम जैन, लेकिन हम अपना कमबख़्त नाम भी नहीं लिख सकते,' वह भोर के समय अपने ख़िदमतगार पर चिल्लाया जब वह बूढ़ा आदमी उसे सुबह के धोने-धुलाने में मदद दे रहा था।

'जी परवर दिगार, आफ़ताबे-आलम, ज़िल्ले-सुब्हानी, शहंशाहे-आलम,' भक्ति राम जैन ने उसे तौलिया थमाते हुए कहा। यह वक़्त, बादशाह के उठते ही उनका स्वागत करने की घड़ी, शाही ख़ुशामद की घड़ी भी थी। भक्ति राम जैन बड़े गर्व से अव्वल दर्जे के शाही ख़ुशामदी के ओहदे पर क़ाबिज़ था और लच्छेदार, पुराने क़िस्म की सामूहिक चाटुकारिता का उस्ताद था। सिर्फ़ वही आदमी सामूहिक चाटुकारिता कर सकता था जिसकी याददाश्त इतनी उम्दा हो कि वह भरपूर स्तुति के अनोखे रूपों को याद रख सके - उन दोहरावों के कारण जो उसमें आवश्यक थे और उन्हें सही क्रम में बैठाने की कुशलता के चलते। भक्तिराम जैन की स्मृति निर्दोष थी। वह घण्टों तक चापलूसी कर सकता था।

बादशाह ने गर्म पानी की चिलमची में अपना ही चेहरा अपनी तरफ़ भवें तरेर कर देखता पाया, क़यामत के आसार की तरह। 'हम शाहों के शाह हैं, भक्तिराम जैन, लेकिन हम ख़ुद अपने क़ानून नहीं पढ़ सकते। इस पर क्या कहोगे तुम ?' 'जी, मुन्सिफ़े-लासानी, परवरदिगार, आफ़ताबे-आलम, ज़िल्लेसुब्हानी, शहंशाहे-आलम, रहमते-इलाही,' भक्तिराम जैन ने जोश में आते हुए कहा।

'हम ज़िल्ले-इलाही, सितारे हिन्द और शम्सुज़्ज़माँ है,' बादशाह ने कहा जो ख़ुशामद के बारे में दो-चार बातें ख़ुद भी जानता था, 'फिर भी हम गन्दी नाली की मानिन्द उस शहर में पाले-पोसे गये जहाँ मर्द बच्चे पैदा करने के लिए औरतों से ज़िना करते हैं, मगर लड़कों से ज़िना करते हैं उन्हें मर्द बनाने के लिए - हम पाले-पोसे गये हर वक़्त उस हमलावर की ताक लगाये जो पीछे से वार करता है, साथ ही सामने खड़े लड़ैत पर नज़र लगाये।'

'जी, ज़िल्लेसुब्हानी, आलमपनाह, मुन्सिफ़े-लासानी, रहमते-इलाही, सितारे-हिन्द, शम्सुज़्ज़माँ,' भक्तिराम जैन ने कहा जो भले ही बहरा था, लेकिन संकेत समझना जानता था।

'क्या किसी शहंशाह को इस तरह पाला-पोसा जाना चाहिए, भक्तिराम जैन ?' बादशाह क्रोध में चिलमची को उलटते हुए दहाड़ा। 'अनपढ़, हरदम चूतड़ों की हिफ़ाज़त करता हुआ, जंगली - क्या एक शहज़ादे को यही होना चाहिए ?'

'जी, हाकिमुल्वक़्त, ज़िल्ले-सुब्हानी, मुन्सिफ़े-लासानी, रहमते-इलाही, सितारे-हिन्द, आफ़ताबे-आलम,' भक्तिराम जैन ने कहा।

'तुम नाटक कर रहे हो कि तुम हमारे होंटो पर आये लफ़्ज़ों को नहीं पढ़ सकते,' बादशाह चिल्लाया।

'जी, ज़िल्ले सुब्हानी, मुन्सिफ़े-लासानी, रहमते-इला...'

'तुम एक दुम्बे हो जिसे हलाल कर दिया जाना चाहिए ताकि हम उसका गोश्त दोपहर के खाने में खा सकें।'

'जी ज़िल्ले सुबहानी, मुन्सिफ़े-लासा...'

'तुम्हारी माँ के साथ सुअर ने ज़िना किया होगा, तुम्हें पैदा करने की ख़ातिर।'

'जी, जिल्ले-सुब्हानी, आफ़ताबे-आल...'

'ख़ैर छोड़ो,' बादशाह ने कहा। 'अब हम बेहतर महसूस कर रहे हैं। जाओ, तुम ज़िन्दा रह सकते हो।'

## (४)

और लो एक बार फिर महल के लाल झरोखों से झण्डों की तरह लहराते रंग-बिरंगे रेशमी कपड़ों के साथ, अफ़ीम की पीनक में देखे गये दृश्य की तरह गर्मी में झिलमिलाता हुआ, सीकरी मौजूद था। अपने मटक-मटक कर चलते मोरों और नाचने वालियों के साथ आख़िरकार यही घर था। अगर युद्ध-जर्जर दुनिया रूखी कड़वी कठोर सच्चाई थी तो सीकरी एक ख़ूबसूरत झूठ था। बादशाह वैसे ही घर लौटा जैसे तम्बाकू पीने वाला अपने हुक़्क़े की तरफ़ लौटता है। वही था जादूगर। इस जगह वह जादू के बल पर एक नयी दुनिया खड़ी कर देगा, ऐसी दुनिया जो धरम, इलाक़े, ओहदे और जाति से परे हो। दुनिया की सबसे ख़ूबसूरत औरतें यहाँ थीं ओर वे सारी-की-सारी उसकी बेगमें थीं। मुल्क के सबसे आला हुनरमन्द यहाँ इकट्ठा थे, और नौरत्न उन्हीं में शामिल थे, सब से शानदार लोगों में से भी नौ सबसे शानदार लोग और ऐसा कुछ नहीं था जो उनकी मदद से वह हासिल नहीं कर सकता था। उनकी मदद से उसकी जादूगरी सारी धरती और भविष्य और अनन्तता को रूपान्तरित कर देगी। बादशाह में असलियत पर टोना करने की ख़ूबी थी और ऐसे सहयोगियों के साथ उसकी मोहिनी कभी नाकाम नहीं हो सकती थी। तानसेन के गीत ब्रह्माण्ड की मुहरों को तोड़ कर खोल सकते थे और देवत्व को रोज़मर्रा की दुनिया में ले आ सकते थे। फ़ैज़ी की शायरी दिल और दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलती थी जिनसे रोशनी और अँधेरा, दोनों देखे जा सकते थे। राजा मान सिंह की हुकूमत और राजा टोडर मल के वित्तीय कौशल का मतलब था कि सल्तनत का बन्दोबस्त सबसे क़ाबिल हाथों में था। और फिर बीरबल था, उन नौ में सबसे अच्छा, जो सबसे अच्छों में सबसे अच्छे थे।

वज़ीरे-आला और ज़माने के सबसे अक़्लमन्द और हाज़िर जवाब आदमी ने हाथी दाँत के स्तम्भ, हिरन मीनार पर बादशाह का स्वागत किया। बादशाह के शरारती मिज़ाज में उबाल-सा आया। 'बीरबल,' अकबर ने घोड़े से उतरते हुए कहा, 'क्या तुम हमारे एक सवाल का जवाब दोगे ? हम बहुत दिनों से इसे पूछने के फ़िराक़ में हैं।' हाज़िर-जवाबी और सूझ-बूझ के लिए मशहूर वज़ीरे-आला ने विनम्रता से सिर झुकाया। 'जैसी आपकी मर्ज़ी, जहाँपनाह।' 'ठीक है तब,' अकबर ने कहा, 'पहले क्या था मुर्ग़ या अण्डा ?' बीरबल ने फ़ौरन जवाब दिया, 'मुर्ग़ा।' अकबर भौंचक्का रह गया। 'तुम इतने यक़ीन के साथ कैसे कह सकते हो ?' उसने जानना चाहा। 'हुज़ूर,' बीरबल ने जवाब दिया, 'मैंने सिर्फ़ एक सवाल का जवाब देने का वादा किया था।

वज़ीरे-आला और बादशाह शहर की फ़सील पर खड़े दूर चक्कर लगाते कौओं को देख रहे थे। 'बीरबल,' अकबर ने ख़यालों में डूबे हुए पूछा, 'तुम्हारे ख़याल से हमारी सल्तनत में कितने कौए होंगे ?' 'जहाँपनाह,' बीरबल ने जवाब दिया, 'ठीक-ठीक निन्यानबे हज़ार नौ सौ निन्यानबे।' अकबर चकरा गया। 'फ़र्ज़ करो, हमने उन्हें गिनवाया,' उसने कहा, 'और इससे ज़्यादा निकले, तब क्या होगा ?' 'तब इसका मतलब होगा,' बीरबल ने जवाब दिया, 'कि पड़ोसी सल्तनत में रहने वाले उनके दोस्त उनसे मिलने आये हैं।' 'और अगर कम निकले तो ?' 'तो हमारे यहाँ से कुछ कौए बाहर की लम्बी-चौड़ी दुनिया का नज़ारा करने परदेस गये होंगे।'

अकबर के दरबार में ज़बानों का एक बड़ा जानकार इन्तज़ार कर रहा था, सुदूर पश्चिमी देश से आया मेहमान : एक जेसुइट ईसाई पादरी जो दर्जनों भाषाओं में धाराप्रवाह बातचीत और बहस-मुबाहसा कर सकता था। उसने बादशाह को अपनी मादरी ज़बान का पता लगाने की चुनौती दी। जिस बीच बादशाह इस सवाल पर ग़ौर कर रहा था उसके आला वज़ीर ने पादरी के गिर्द एक चक्कर लगाया और अचानक उसके पिछवाड़े पर कस कर लात लगायी। पादरी के मुँह से गालियों की एक धारा फूट पड़ी - पुर्तगाली में नहीं, इतालवी में। 'आपने ग़ौर किया, जहाँपनाह,' बीरबल ने कहा, 'कि जब गालियाँ देने का वक़्त आता है तो शख़्स हमेशा अपनी मादरी ज़बान इस्तेमाल करता है।'

'अगर तुम नास्तिक होते, बीरबल,' अकबर ने अपने वज़ीरे-आला को चुनौती दी, 'तो तुम दुनिया के सारे आला मज़हबों के सच्चे अक़ीदतमन्दों से क्या कहते ?' बीरबल त्रिविक्रमपुर का एक धर्मपरायण ब्राह्मण था, लेकिन उसने बेहिचक कहा, 'मैं उनसे कहता कि मेरे ख़याल में वे सारे-के-सारे भी नास्तिक थे; मैं उनसे महज़ एक ख़ुदा कम में यक़ीन रखता हूँ।' 'यह कैसे ?' बादशाह ने पूछा। 'सभी सच्चे अक़ीदतमन्दों के पास अपने ख़ुदा को छोड़ बाक़ी हर ख़ुदा में यक़ीन न करने की अच्छी-ख़ासी वजह होती है,' बीरबल ने कहा, 'और इसलिए दरअसल वही मुझे किसी भी ख़ुदा में यक़ीन न करने की वाजिब वजह मुहैया कराते हैं।'

वज़ीरे-आला और बादशाह ख़्वाबगाह पर खड़े, बादशाह के निजी सरोवर, अनूप तलाव की थिर सतह के पार देख रहे थे, जो बेमिसाल था, सारे मुमकिन तालाबों में बेहतरीन, जिसके बारे में कहा जाता था कि जब सल्तनत पर कोई मुसीबत आने को होगी तो उसका पानी ख़बरदार करने लिए एक निशानी भेज देगा। 'बीरबल,' अकबर ने कहा, 'जैसा तुम जानते हो, हमारी पसन्दीदा बेगम का बदक़िस्मती से कोई वजूद नहीं है। इसके बावजूद कि हम सबसे ज़्यादा उससे मुहब्बत करते हैं, दूसरी सभी बेगमों से ज़्यादा उसको सराहते हैं और गँवा दिये गये कोहेनूर से भी ज़्यादा उसकी क़दर करते हैं, उसे तसल्ली नहीं होती। "आपकी सबसे बदसूरत, सबसे बदमिज़ाज और झगड़ालू बेगम भी आख़िर हाड़-मांस की बनी है," वह कहती है। "बिलआख़िर मैं उसका मुकाबला नहीं कर पाऊँगी।" वज़ीरे-आला ने बादशाह को सलाह दी, 'जहाँपनाह, आपको उनसे कहना चाहिए कि सही तौर पर अन्त में ही उनकी कामयाबी और फ़तह सबके सामने ज़ाहिर होगी, क्योंकि आख़िर में उनके वजूद से ज़्यादा और किसी भी बेगम का वजूद नहीं होगा, जबकि उन्होंने ताज़िन्दगी आपकी मुहब्बत हासिल करने की ख़ुशी पायी होगी और उनकी शोहरत जुग-जुग तक गूँजती रहेगी। इस तरह, दरअसल, हालाँकि यह सही है कि उनका कोई वजूद नहीं है, यह कहना भी सही है कि वही हैं जो ज़िन्दा हैं। अगर न होतीं, तब वहाँ, उस ऊँचे झरोखे के पीछे कोई आपका इन्तज़ार न कर रहा होता।'

◆◆◆◆◆

जोधा की बहनें, उसकी सौतनें, उससे नाराज़ रहती थीं। आलीजाह एक ऐसी औरत का संग-साथ कैसे पसन्द करते थे जिसका वजूद ही नहीं था ? जब वे चले जायें, तब कम-से-कम उसे भी ग़ैरहाज़िर हो जाना चाहिए; उसे सचमुच ज़िन्दा-जावेद बेगमों के साथ-साथ बने रहने का कोई काम नहीं था। उसे ग़ायब हो जाना चाहिए, उस रूह की तरह जो वह थी, शीशे या परछाईं में सरक कर गुम हो जाना चाहिए। वह ऐसा नहीं करती थी, यह बात -ज़िन्दा बेगमों का निष्कर्ष था - उसी तरह का बेतुकापन था जिसकी उम्मीद आप एक ख़याली शख़्सियत से कर सकते थे। उसे अदब-आदाब सिखाने के लिए कैसे पाला-पोसा गया होगा, जबकि उसे पाला-पोसा ही

नहीं गया था ? वह बेसिखायी-पढ़ायी ख़यालो चीज़ थी और इसी क़ाबिल थी कि उसे नज़रन्दाज़ कर दिया जाय।

बादशाह ने उसे, वे मन-ही-मन सुलगतीं, उन सब के छोटे-छोटे टुकड़े चुरा कर गढ़ा था। वह कहता था कि वह जोधपुर के राजा की बेटी थी। वह नहीं थी! वह तो एक दूसरी बेगम थी और वह भी बेटी नहीं, बहन थी। बादशाह को यह भी यक़ीन था कि उसकी ख़यालो माशूक़ा उसके पहलौठी के बेटे की माँ थी, लम्बे इन्तज़ार के बाद हुए पहले बेटे की, जो एक फ़कीर की दुआओं का नतीजा था, उसी फ़कीर की दुआओं का जिसकी ख़ानकाह उस पहाड़ की चोटी पर थी जिसके गिर्द यह नया फ़तहपुर बसाया गया था। लेकिन वह शहज़ादे सलीम की माँ नहीं थी, जैसा कि शहज़ादे सलीम की असली माँ, मरियमउज़्ज़मानी के नाम से जानी जाने वाली राजकुमारी हीरा कुँवरी, जो आमेर के कछवाहा वंश के राजा बिहार मल की बेटी थी, अफ़सोस के साथ हर सुनने वाले को बताती। इस तरह : काल्पनिक बेगम की बेपनाह ख़ूबसूरती एक बेगम की देन थी, उसका हिन्दू धर्म दूसरी बेगम की और उसकी बेशुमार दौलत तीसरी की। उसका मिज़ाज, बहरहाल, ख़ुद अकबर ने रचा था। कोई असली औरत कभी वैसी नहीं थी, इतनी सुशील और ध्यान देने वाली, इतनी विनम्र और समर्पित, हरदम उपलब्ध। वह एक असम्भव-सी चीज़ थी, कल्पना से भी परे का आदर्श। वे उससे डरती थीं, यह जानते हुए कि असम्भव होते हुए, वह दुर्दमनीय रूप से आकर्षक थी, और यही वजह थी कि बादशाह उसे सबसे ज़्यादा प्यार करता था। वे उससे इसलिए भी नफ़रत करती थीं, क्योंकि उसने उनके जीवन-वृत्त, उनके इतिहास चुरा लिये थे। अगर वे उसे क़त्ल कर सकतीं, तो उन्होंने ऐसा कर दिया होता, लेकिन जब तक बादशाह उससे थक न जाये या ख़ुद सिधार जाये, वह अमर थी। बादशाह की मौत का ख़याल कल्पना के परे नहीं था, लेकिन फ़िलहाल बेगमें इसके बारे में नहीं सोच रही थीं। फ़िलहाल वे अपने कष्ट ख़ामोशी से बरदाश्त कर रही थीं। 'बादशाह पागल हैं,' वे मन-ही-मन बुड़बुड़ातीं, लेकिन अक़्लमन्दी से काम लेते हुए इन शब्दों को मुँह से न निकालतीं। और जब वह घोड़े पर सवार यहाँ-वहाँ मार-काट मचाता घूमता रहता था, वे उसकी कल्पनिक संगिनी को उसके हाल पर छोड़ देती थीं। वे उसका नाम तक न लेतीं। जोधा, जोधाबाई। ये शब्द कभी उनके होंटों पर न आते। वह हरम में अकेले डोलती-फिरती। वह पत्थर की नक़्क़ाशीदार जालियों से छन कर नज़र आती एकाकी छाया थी। वह हवा में लहराता कपड़ा थी। रात को वह पंच महल की सबसे ऊपरी मंज़िल पर नन्ही-सी छतरी के नीचे खड़ी होती और बादशाह के लौटने का इन्तज़ार करती जो उसे असलियत में तब्दील कर देता था। बादशाह जो लड़ाइयों से घर लौट रहा था।

◆◆◆◆◆

जादूगरनियों और उनके जादू-टोने के क़िस्सों के साथ विदेश से फ़तहपुर सीकरी आये उस पीले बालों वाले गपोड़ी के उपद्रवकारी आगमन से बहुत पहले जोधा को पता था कि उसके नामी-गिरामी शौहर की घुट्टी में जादूगरी ज़रूर रही होगी। सबने चंगेज़ ख़ान की पिशाच विद्या की कहानियाँ सुन रखी थीं, उसके द्वारा जानवरों की क़ुर्बानी और गुप्त जड़ी-बूटियों के इस्तेमाल की, और कैसे काले जादू की मदद से उसने आठ लाख वंशज पैदा किये थे। सबने सुना हुआ था कि कैसे तैमूर लंग ने क़ुरान को जला दिया था और पृथ्वी को जीतने के बाद ऊपर सितारों तक चढ़ने और स्वर्ग को जीतने की भी कोशिश की थी। हर आदमी उस क़िस्से से वाकिफ़ था कि कैसे बाबर ने मरते हुए हुमायूँ की ज़िन्दगी, उसके बिस्तर के चक्कर काटते हुए, मौत को फुसला कर, बेटे से

परे बाप की तरफ़ खींच लाते हुए, बचायी थी, अपनी क़ुर्बानी देते हुए, ताकि उसका बेटा ज़िन्दा रह सके। मौत और शैतान से ये काले समझौते जोधा के शौहर की विरासत थे, और उसका अपना वजूद इस बात का सबूत था कि जादू उसके भीतर कितनी मज़बूती से रचा-बसा था।

स्वप्न से असली ज़िन्दगी की सृष्टि एक ग़ैरइन्सानी कारनामा है, देवताओं के विशेष अधिकार पर क़ब्ज़ा करता हुआ। उन दिनों सीकरी शायरों और कलाकारों से अटा पड़ा था, उन इतराते हुए अहंकारियों से जो अपने अन्दर भाषा और कल्पना की ऐसी ताक़त की दावेदारी करते थे, जिससे वे जादू के बल पर निपट शून्य से सुन्दर चीज़ें पैदा कर सकते थे, लेकिन न कोई कवि, न चित्रकार, न संगीतकार, न शिल्पी उस चीज़ के नज़दीक पहुँच सका था जो बादशाह ने, उस मुकम्मल शख़्सियत ने उपलब्ध की थी। दरबार में विदेशी, इत्र-फुलेल चुपड़े परदेसी, खुर्राट ब्योपारी, पश्चिम से आये सुते चेहरों वाले पादरी भी भरे हुए थे, जो नागवार, नापसन्दीदा ज़बानों में अपने मुल्कों, अपने ख़ुदाओं, अपने बादशाहों की डींगें मारते रहते थे। अपने महल की ऊपरी मंज़िल पर एक ऊँचे झरोखे को ढँकने वाली पत्थर की जाली के बीच से वह दीवाने-आम के बड़े-से, चारदीवारी से घिरे अहाते पर निगाह डालती और वहाँ भीड़ लगाये विदेशियों को इतराते-इठलाते देखती रहती। जब बादशाह उसे उनके पहाड़ों और वादियों की तस्वीरें दिखाता जो वे लाये थे, वह हिमालय और कश्मीर के बारे में सोचती और विदेशियों द्वारा कुदरती ख़ूबसूरती की मामूली नक़लों पर, उनके *ऐल्प्स की घाटियों और पहाड़ियों* पर हँस देती, आधी-अधूरी चीज़ों के बारे में बताने के लिए आधे-अधूरे शब्द। उनके बादशाह जंगली थे और उन्होंने अपने ख़ुदा को एक पेड़ पर कीलों से जड़ दिया था। ऐसे हास्यास्पद लोगों से उसका क्या मतलब हो सकता था ?

उनकी कहानियाँ भी उसे प्रभावित नहीं करती थीं। उसने बादशाह से किसी मुसाफ़िर की सुनायी कहानी सुनी थी जिसमें यूनान के एक प्राचीन मूर्तिकार ने एक औरत में जान फूँकी थी और फिर उससे प्यार करने लगा था। क़िस्से का अंजाम अच्छा नहीं था और यूँ भी वह क़िस्सा बच्चों के लिए था। उस क़िस्से का मुक़ाबला ख़ुद उसके असली वजूद से नहीं किया जा सकता था। आख़िरकार, यहाँ वह थी। वह बस थी। सारी दुनिया में सिर्फ़ एक आदमी ने ख़ालिस इच्छा-शक्ति के बल पर ऐसा कारनामा, ऐसी रचना कर दिखायी थी। उसे फ़िरंगी मुसाफ़िरों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, हालाँकि उसे मालूम था कि वे शहंशाह को आकर्षित करते थे। वे दरअसल... जाने किस चीज़ की खोज में आते थे ? किसी काम की चीज़ की नहीं। अगर उनमें ज़रा भी सूझ-बूझ होती तो अपनी यात्रा की निरर्थकता उनके सामने ज़ाहिर हो जाती। सफ़र बेमानी था। वह तुम्हें उस जगह से हटा देता था, जहाँ तुम्हारा कोई अर्थ होता था और जिसे अपनी ज़िन्दगी अर्पित करके तुम कोई अर्थ प्रदान करते थे, और तुम्हें ऐसे परिस्तानों में ले जाता था जहाँ तुम स्पष्ट रूप से निरर्थक थे और ऐसा दिखते भी थे।

हाँ : यह जगह, सीकरी, उनके लिए एक परिस्तान थी, ठीक जैसे उनका इंग्लैण्ड और पुर्तगाल, उनका हॉलैण्ड और फ्रान्स जोधा की समझ-बूझ के बाहर थे। दुनिया कुल मिला कर एक ही चीज़ नहीं थी। 'हम उनका स्वप्न हैं,' उसने बादशाह से कहा था, 'और वे हमारा।' वह उसे प्यार करती थी, क्योंकि वह उसकी राय को कभी ख़ारिज नहीं करता था, कभी अपने रौबदार हाथ की हरकत से उसे हवा में उड़ा नहीं देता था। 'लेकिन ज़रा सोचो, जोधा,' एक शाम जब वे गंजीफ़ा खेल रहे थे, उसने उससे कहा था, 'अगर हमारी नींद दूसरों के सपनों में खुलती और हम उन्हें बदल सकते और हममें इतनी हिम्मत होती कि उन्हें अपने सपनों में बुला सकें तो क्या होता। क्या होता अगर सारी दुनिया एक जीता-जागता सपना बन जाती ?' जब वह जीते-जागते सपनों की बात करता तो वह उसे हवाई बातें बनाने वाला नहीं कह सकती थी : क्योंकि आख़िर वह इसके अलावा और क्या थी भला ?

वह कभी उन महलों से बाहर नहीं निकली थी जहाँ वह एक दशक पहले पैदा हुई थी, जवान जहान पैदा हुई, उस आदमी से जो न सिर्फ़ उसका सर्जक था, बल्कि उसका प्रेमी भी था। यह सही था : वह उसकी पत्नी और बच्ची, दोनों थी। अगर वह कभी महल से बाहर निकली तो, या ऐसा उसको हमेशा से शक था, जादू टूट जायेगा और उसका वजूद बाक़ी न रहेगा। शायद वह ऐसा कर सके अगर बादशाह अपने विश्वास की ताक़त से उसे सहारा देने के लिए वहाँ मौजूद हो, लेकिन अकेले तो यह उसके बस में नहीं था। ख़ुशक़िस्मती से, उसे महल को छोड़ने की कोई इच्छा ही नहीं थी। हरम की अलग-अलग इमारतों को जोड़ने वाले पर्देदार गलियारों की भूल-भुलैयाँ उसे घूमने-फिरने और सफ़र की तमाम सुविधाएँ और सम्भावनाएँ उपलब्ध करा देती थी जिनकी उसे ज़रूरत थी। यही उसका छोटा-सा ब्रह्माण्ड था। उसे दूसरी जगहों में किसी विजेता की-सी दिलचस्पी नहीं थी। बाक़ी सारी दुनिया दूसरों के लिए रहे। क़िलेबन्द पत्थरों का यह चौक उसका था।

वह एक ऐसी औरत थी जिसका कोई अतीत नहीं था, जो इतिहास से परे थी, या इसकी बजाय उसका सिर्फ़ वही इतिहास था जो उसे बादशाह ने बख़्शने की इनायत की थी, और जिसे दूसरी बेगमें कटुता और कठोरता से चुनौती देती थीं। उसके स्वतन्त्र अस्तित्व का सवाल, या यह सवाल कि क्या उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व था, उठे बग़ैर रहता नहीं था, बार-बार, चाहे वह चाहती या नहीं। अगर भगवान अपनी सृष्टि – मनुष्य – से मुँह फेर ले तो क्या मनुष्य का वजूद न रहेगा ? यह तो उस सवाल का विराट प्रारूप था, मगर जो उसे परेशान करते थे वे तो इस सवाल के टुच्चे प्रारूप थे। क्या उसकी इच्छा उस आदमी की इच्छा से मुक्त थी जिसने अपनी इच्छा के बल पर उसे अस्तित्व दिया था ? क्या उसका वजूद महज़ इसी बात का मुहताज था कि बादशाह ने उसके अस्तित्व की सम्भावना के प्रति अपने अविश्वास को ख़ारिज कर रखा था ? अगर वह मर गया तब भी क्या वह ज़िन्दा रहेगी ?

उसे अपनी नब्ज़ तेज़ होती महसूस हुई। कुछ होने वाला था। उसने ख़ुद को मज़बूत होता, ठोस होता, महसूस किया। उसके सन्देह हवा हो गये। वह आ रहा था।

बादशाह महल के अहाते में दाख़िल हो चुका था और वह उसकी ताक़त को महसूस कर सकती थी जो उसे उसकी ज़रूरत के चलते उसकी तरफ़ ला रही थीं। हाँ, कुछ होने वाला था। उसने बादशाह के क़दमों की आहट को अपने ख़ून में महसूस किया, वह उसे अपने आप में देख सकती थी, उसके आकार का बढ़ना जैसे-जैसे वह उसकी तरफ़ बढ़ रहा था, लेकिन इसके साथ ही वह अपना आप भी थी। हाँ। अब जबकि सृष्टि का काम पूरा हो गया था, वह इस बात के लिए आज़ाद थी कि वह वह बन सके जो बादशाह ने रचा था, आज़ाद जैसा हर कोई अपने होने और करने के अपने स्वभाव के दायरे में था। अचानक वह कितनी ताक़तवर हो गयी थी, किस क़दर ख़ून और ग़ुस्से से भरी हुई। बादशाह की ताक़त को उस पर पूरा अख़्तियार नहीं था। उसे सिर्फ़ सुसंगत होने की ज़रूरत थी। उसने अब जितना सुसंगत पहले कभी नहीं महसूस किया था। उसका स्वभाव उसके भीतर बाढ़ की तरह दौड़ गया। उसके भीतर अधीनता का भाव नहीं था। अकबर को दीन-हीन औरतें पसन्द नहीं थीं।

सबसे पहले तो वह उन्हें फटकारेगी। वे इतने दिन बाहर कैसे रह सकते थे ? उनके न होने पर उसे कितनी साज़िशों से जूझना पड़ता था। यहाँ सब कुछ इस क़दर भरोसे से परे था। दीवारें तक फुसफुसाहटों से भरी हुई थीं। वह उन सबसे लड़ती रही थी और उसने महल को उनके लौटने के दिन तक सुरक्षित रखा था, घरेलू ख़िदमतगारों की छोटी-छोटी, स्वार्थ-प्रेरित धोखेबाज़ियों को शिकस्त देती हुई, दीवारों से लटकी जासूसी करने वाली छिपकलियों के मंसूबों को ध्वस्त करती हुई, साज़िशी चूहों की भाग-दौड़ को शान्त करती हुई। यह सब उस वक़्त, जब वह ख़ुद को कुम्हलाते हुए महसूस कर रही थी, जब महज़ अपने वजूद को बचाये रखने की

जद्दो-जेहद में उसे अपनी समूची इच्छा-शक्ति लगाने की ज़रूरत महसूस हो रही थी। दूसरी बेगमें...नहीं, वह दूसरी बेगमों का ज़िक्र नहीं करेगी। दूसरी बेगमों का कोई वजूद नहीं था। वजूद सिर्फ़ उसी का था। वह भी एक जादूगरनी थी। वह ख़ुद अपनी जादूगरनी थी। उसे सिर्फ़ एक आदमी पर टोना करने की ज़रूरत थी और वह यहाँ आ गया था। वह दूसरी बेगमों के पास नहीं जा रहा था। वह उसके पास आ रहा था, जिससे उसे ख़ुशी मिलती थी। वह उससे भरी हुई थी, अपने प्रति उसकी कामना से, उस कुछ से जो होने वाला था। वह उसकी ज़रूरत की जानकार थी। उसे सब कुछ मालूम था।

दरवाज़ा खुला। वह थी। वह अमर थी, क्योंकि उसकी रचना प्रेम से हुई थी।

उसने एक कलग़ीदार सुनहरी पगड़ी और सुनहरा ज़रीदार अँगरखा पहन रखा था। वह उस देश की धूल-गर्द को, जिसे उसने फ़तह किया था, सिपाही के तमग़े की तरह लिये चल रहा था। उसके चेहरे पर एक झेंपी हुई मुस्कान थी। ' ''मैं'' इससे भी जल्दी घर लौटना चाहता था,' उसने कहा, ' ''मुझे'' रुकना पड़ा।' उसकी बातों में कुछ अटपटा और आज़माइशी-सा था। उसे हो क्या गया था ? उसने बादशाह की इस अस्वाभाविक हिचकिचाहट को नज़रन्दाज़ करने और तयशुदा ढंग से चलने की सोची।

'अच्छा, आप ''चाहते'' थे,' उसने एक रेशमी दुपट्टे से अपने चेहरे के निचले हिस्से को ढँकते हुए, अपने रोज़मर्रा के मामूली लिबास में, सीधा तन कर खड़े हुए पूछा। 'आदमी को यह नहीं पता होता कि वह क्या चाहता है। आदमी वह चाहता ही नहीं जो वह कहता है कि वह चाहता है। आदमी सिर्फ़ वही चाहता है जिसकी उसे ज़रूरत होती है।'

बादशाह को हैरत हुई कि जोधा ने इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया कि वह प्रथम पुरुष में उतर आया था, जो उसे इज़्ज़त बख़्शता था, जिसके बारे में ख़याल था कि वह उसे ख़ुशी के मारे होश खोने पर मजबूर कर देगा, जो बादशाह की सबसे नयी खोज और उसके प्रेम का ऐलान था। वह चकरा गया और थोड़ा हतप्रभ भी हो आया।

'कितने आदमियों को तुमने जाना है, जो तुम इतनी जानकार बन गयी हो,' उसने त्योरियाँ चढ़ा कर उसके नज़दीक आते हुए कहा। 'क्या तुमने अपने लिए कल्पना से आदमी जुटाये जिस बीच ''मैं'' दूर गया हुआ था, या तुमने अपने मज़े के लिए आदमी ढूँढे, आदमी जो सपने नहीं थे ? क्या ऐसे आदमी हैं जिन्हें ''मुझे'' मारना है।' यक़ीनन इस बार उस सर्वनाम के क्रान्तिकारी, ऐन्द्रिक नयेपन पर उसका ध्यान जायेगा ? यक़ीनन अब वह समझ लेगी कि वह क्या कहने की कोशिश कर रहा था।

वह नहीं समझी। उसका ख़याल था कि वह जानती थी बादशाह को किस चीज़ ने उत्तेजित कर दिया था और वह उन शब्दों के बारे में ही सोच रही थी जो उसे अपना बनाने के लिए उसे कहने थे।

'औरतें आम तौर पर आदमियों के बारे में उससे कम सोचती हैं, जितना कि आम आदमी कल्पना कर सकते हैं। औरतें ख़ुद अपने आदमियों के बारे में उससे कम बार सोचती हैं, जितना उनके आदमी य़कीन करना चाहते हैं। सारी औरतों को सारे आदमियों की उतनी ज़रूरत नहीं होती जितनी सारे आदमियों को औरतों की ज़रूरत होती है। यही वजह है कि अच्छी औरत को दबाये रखना क्यों इतना ज़रूरी होता है। अगर तुम उसे दबाये नहीं रखोगे तो वह यक़ीनन निकल भागेगी।'

उसने उसका स्वागत करने के लिए सिंगार-पटार नहीं किया था। 'अगर आपको गुड़ियाँ चाहिएँ,' उसने कहा, 'तो जाइए गुड़ियों के घर जहाँ वे सजती-सँवरतीं और किलकारियाँ मारतीं और एक-दूसरे के बाल खींचतीं, आपका इन्तज़ार कर रही हैं।' यही भूल थी। उसने दूसरी बेगमों का ज़िक्र कर दिया था। बादशाह की भवें सिकुड़ गयीं और आँखों में बादल-सा छा गया। जोधा ने ग़लत चाल चल दी थी। जादू लगभग टूट चला

था। जोधा ने अपनी आँखों की समूची ताक़त उसकी आँखों में निचोड़ दी और वह उसके पास लौट आया। जादू बरक़रार रहा। उसने अपनी आवाज़ ऊँची की और बात जारी रखी।

उसने उसकी ख़ुशामद नहीं की। 'आप अभी से बूढ़े दिखाई देने लगे हैं,' उसने कहा। 'आपके बेटे सोचेंगे आप उनके दादा हैं।' उसने उसे उसकी विजयों पर बधाई नहीं दी। 'अगर तारीख़ ने दूसरा रास्ता चुना होता,' उसने कहा, 'तो पुराने देवता अब भी राज कर रहे होते, वही देवता जिन्हें आपने हराया है, अनेक हाथों अनेक सिरों वाले देवता, सज़ाओं और क़ानूनों की बजाय क़िस्सों और कारनामों से भरे हुए, जीवों के देवता कर्मों की देवियों की बग़ल में मौजूद, नाचते देवता, हँसते देवता, बिजली और बाँसुरी वाले देवता, इतने इतने सारे देवता और हो सकता है यह बेहतरी ही होती।' वह जानती थी कि वह सुन्दर है और अब झीनी रेशमी नक़ाब गिराते हुए उसने वह ख़ूबसूरती खोल दी जो उसने छिपा रखी थी और वह अपने को खो बैठा। 'जब एक लड़का किसी औरत की कल्पना करता है तो वह उसे बड़ी-बड़ी छातियाँ और छोटा-सा दिमाग़ देता है,' वह बुदबुदायी। 'जब एक बादशाह बेगम की कल्पना करता है, वह मेरे सपने देखता है।'

वह सातों प्रकार के नखक्षतों में निष्णात थी, जिसका मतलब है कामक्रीड़ा को और सान पर चढ़ाने के लिए नाख़ूनों को इस्तेमाल करने की कला। उसके यात्रा पर रवाना होने से पहले जोधा ने उसे तीन गहरे चिह्नों से अंकित किया था, जो दायें हाथ की पहली तीन उँगलियों से उसकी पीठ, उसके सीने और उसके अण्डकोशों पर भी लगायी गयी खरोंचे थीं : उसे याद रखने के लिए छोटी-सी निशानी। अब जबकि वह घर आ चुका था वह उसमें थरथरी पैदा कर सकती थी, उसके बालों को वाक़ई सीधे खड़े होने पर मजबूर कर सकती थी, अपने नाख़ूनों को उसके गालों और निचले होंट और छातियों पर बिना कोई निशान छोड़े गड़ाते हुए। या वह उसे चिह्नित कर सकती थी उसकी गरदन पर अर्द्ध-चन्द्र का निशान छोड़ते हुए। वह देर तक आहिस्ता-आहिस्ता अपने नाख़ूनों को उसके चेहरे में गड़ाये रख सकती थी। वह उसके सिर और जाँघों और फिर उसकी हमेशा से सम्वेदनशील छातियों पर लम्बे निशान लगा सकती थी। वह खरगोश की छलाँग का खेल खेल सकती थी उसके शरीर को और कहीं छुए बग़ैर उसकी छाती की घुण्डियों के घेरे को चिह्नित करते हुए और कोई औरत मोर-पाँव में उसके जितनी माहिर नहीं थी, उस नाज़ुक जुगुत में : उसने अपना अँगूठा उसकी बायीं घुण्डी पर रखा और अपनी चार बाक़ी उँगलियों से वह उसकी छाती पर 'चलती-फिरती' रही, अपने लम्बे नाख़ून, अपने पंजों-सरीखे गोल नाख़ून गड़ाती हुई, जिन्हें उसने इसी लम्हे की उम्मीद में सँभाल कर रखा और नुकीला बनाया हुआ था, उन्हें बादशाह की चमड़ी में गड़ाती हुई हत्ताकि उन्होंने ऐसे निशान बना दिये जैसे मोर मिट्टी से हो कर गुज़रते समय बना देता है। वह जानती थी कि जिस बीच वह ये हरकतें कर रही होगी वह क्या कहेगा। वह उसे बतायेगा कि कैसे, अपने फ़ौजी ख़ेमे की तन्हाई में, वह अपनी आँखें बन्द करके उसकी हरकतों की नक़ल करता था, कल्पना करता था कि उसके शरीर पर हरकतज़दा नाख़ून उसके, जोधाबाई के थे, और उत्तेजित हो जाता था।

उसने इन्तज़ार किया कि वह इस बात को कहे, पर उसने कहा नहीं। कुछ था जो अलग-सा था। बादशाह में अब एक अधीरता थी, एक खीझ भी, एक चिढ़ जो वह समझ नहीं पा रही थी। ऐसा लगता था कि मानो प्रेम-कला की अनेक बारीक़ियाँ और नज़ाकतें अपना जादू खो बैठी थीं। और बादशाह की बस यही इच्छा थी कि उस पर क़ब्जा करे और फ़ारिग़ हो। वह समझ गयी कि वह बदल गया था। और अब बाक़ी सब कुछ भी बदल जाने वाला था।

◆◆◆◆◆

रही बात बादशाह की तो उसने फिर कभी किसी दूसरे आदमी के सामने अपने लिए एकवचन का प्रयोग नहीं किया। वह दुनिया की नज़र में अनेक था, उस औरत की राय में भी अनेक था जो उसे प्यार करती थी और अनेक वह रहने वाला था। उसने सबक़ सीख लिया था।

## (५)

उसके बेटे, अपने घोड़ों को तेज़ रफ़्तार में दौड़ाते, ज़मीन में ख़ेमों के खूँटों को अपने नेज़ों का निशाना बनाते; उसके बेटे, अब भी घोड़ों पर सवार, चौगान के खेल में अपना कौशल दिखाते हुए, घूमे हुए सिरों वाली लम्बी छड़ियों से गेंद को मार कर उसे जालीदार निशाने में डालते हुए; उसके बेटे रात को एक चमकती हुई गेंद से पोलो खेलते हुए; उसके बेटे शिकार के दौरान शिकारियों के उस्ताद से तेंदुए को मार गिराने के राज़ सीखते हुए; उसके बेटे इश्क़बाज़ी में, कबूतर उड़ाने के खेल में हिस्सा लेते हुए...कितने सजीले थे उसके बेटे! कितनी महारत से वे खेलते थे! वली अहद शहज़ादा सलीम को देखिए, चौदह बरस की उमर में ही तीरन्दाज़ी में इतना माहिर कि उसे शामिल करने के लिए खेल के उसूल सुधार कर दोबारा लिखे जा रहे थे। आह, मुराद, दानियाल, मेरे सरपट सवारो, बादशाह ने सोचा। वह उनसे कितना प्यार करता था, तिस पर भी कितने निकम्मे थे वे! उनकी आँखें देखिए : वे अभी से नशे में थे! वे ग्यारह और दस बरस के थे और वे अभी से टुन्न थे, नशे में घोड़ों पर सवार, बेवक़ूफ़। उसने अहलकारों को कड़ी हिदायतें दे रखी थीं, लेकिन ये शाही फ़रज़न्द थे और किसी नौकर में उनके हुक्म की उदूली की हिम्मत नहीं थी।

उसने उन पर जासूस तैनात कर रखे थे, यक़ीनन, लिहाज़ा उसे सलीम की अफ़ीम की आदत और विकृत कामुकता के जौहर दिखाने में बितायी गयी रातों के बारे में सब कुछ मालूम था। शायद यह समझ में आ सकता था कि जवानी के पहले-पहले जोश में कोई नौजवान लौंडियों से गुदामैथुन का शौक पाल ले, लेकिन जल्द ही उसके कान में कुछ मशविरा डालना ज़रूरी होगा, क्योंकि नाचनेवालियाँ शिकायत करने लगी थीं, उनके घायल पिछवाड़े, उनकी रौंदी गयी अनारकलियाँ, उन नन्ही छिनालों का नाचना मुश्किल बना रही थी।

आह, अफ़सोस, सद अफ़सोस, उसके बदकार बच्चों के लिए, उसका गोश्त-पोस्त, उसकी सारी ख़ामियों के वारिस, पर एक भी ख़ूबी के नहीं। शहज़ादे मुराद की मिर्गी की बीमारी से अभी तक अवाम को अनजान रखा गया था, मगर कब तलक ? और दानियाल तो किसी काम का नहीं जान पड़ता था। लगता था जैसे उसका कोई व्यक्तित्व ही न हो, हालाँकि उसे ख़ानदान के ख़ूबसूरत नाक-नक़्श विरसे में मिले थे, एक ऐसी उपलब्धि जिस पर उसे क़ायदे से कोई फ़ख़्र नहीं हो सकता था, हालाँकि झूठे घमण्ड में इतराते हुए वह ऐसा करता था। क्या एक दस बरस के लड़के को इतनी कठोरता से कसौटी पर कसना वाजिब था ? हाँ, यक़ीनन था। क्योंकि ये लड़के नहीं थे। ये नन्हें ख़ुदा थे, भविष्य के तानाशाह थे, दुर्भाग्य से राज करने के लिए जन्मे थे। वह उनसे प्यार करता था। वे उसे धोखा देंगे। वे उसकी ज़िन्दगी का नूर थे। वे उसे नींद में ठिकाने लगाने आयेंगे। ये नन्हें लौंडेबाज़। वह उनकी चालों का इन्तज़ार कर रहा था।

बादशाह के दिल में आज इच्छा पैदा हुई, जैसी कि हर रोज़ होती थी, कि काश, उसे अपने बेटों पर विश्वास हो पाता। उसे बीरबल और जोधा और अबुल फ़ज़ल और टोडरमल पर विश्वास था, मगर वह लड़कों को कड़ी निगरानी में रखता था। वह उन पर विश्वास करने के लिए तरसता था, ताकि वे उसके बुढ़ापे का मज़बूत सहारा साबित हो सकें। वह सपने देखता था कि जब उसकी अपनी आँखें धुँधलाने लगें तो वह उनकी

छै सुन्दर आँखों पर भरोसा कर सके, और जब उसकी अपनी बाँहें ताक़त खो बैठें तो उनकी छै मज़बूत बाँहों पर, उसके कहने पर एक हो कर काम करती हुईं, ताकि वह सचमुच देवता-सरीखा बन सके - अनेक सिरों, अनेक बाँहों वाला। वह उन पर विश्वास करना चाहता था, क्योंकि उसके ख़याल में विश्वास एक गुण था और वह उसे पोसना चाहता था, लेकिन वह अपने ख़ून का इतिहास जानता था, वह जानता था कि भरोसे के क़ाबिल होना उसके लोगों की आदतों में शुमार नहीं था। उसके बेटे शानदार मूँछों वाले दमकते हुए वीर बनेंगे और उसके ख़िलाफ़ आ खड़े होंगे, वह इसे उनकी आँखों में अभी से देख सकता था। उसके लोगों में, फ़रग़ना के चग़ताइयों में, तख़्त पर बैठे अपने वालिदों के ख़िलाफ़ बच्चों के साज़िश करने, उन्हें तख़्त से उतार देने, उन्हें ख़ुद उनके क़िलों में या झीलों के बीचोंबीच टापुओं पर क़ैद करने या ख़ुद अपनी तलवारों से उनकी हत्या कर देने का रिवाज आम था।

सलीम, ख़ुदा ख़ैर करे, वह ख़ून का प्यासा बदमाश, अभी से लोगों को मारने के नायाब तरीक़े सोचने लगा था। *अगर मेरे साथ कोई ग़द्दारी करेगा, अब्बा, मैं एक गधे को हलाल करूँगा और ग़द्दार को उस जानवर की ताज़ा खिंची गीली खाल में सिलवा दूँगा। फिर मैं उसे ख़च्चर पर उल्टा बैठा कर दोपहर के वक़्त शहर में घुमाऊँगा और बाक़ी काम तपते हुए सूरज के हवाले कर दूँगा।* बेरहम सूरज, जो खाल को सुखा देगा जिससे होगा यह कि वह आहिस्ता-आहिस्ता सिकुड़ेगी और खाल के भीतर सिला गया दुश्मन धीरे-धीरे दम घुटने से मर जायेगा। ऐसा नागुज़ीर ख़याल तुम्हें आया कहाँ से ? बादशाह ने अपने बेटे से पूछा। *मैंने ख़ुद इसे सोचा,* लड़के ने झूठ बोला। *और आप कैसे बेरहमी की बात कर सकते हैं, अब्बा। मैंने ख़ुद आपको तलवार खींच कर उस आदमी के पैर काटते देखा था जिसने जूतों की एक जोड़ी चुरा ली थी।* बादशाह जब सच सुनता तो उसे पहचान लेता था। अगर शहज़ादा सलीम के भीतर तारीकी थी तो वह उसे ख़ुद शाहों के शाह से विरासत में हासिल हुई थी।

सलीम उसका सबसे प्यारा बेटा था और उसका सबसे सम्भावित हत्यारा। जब वह नहीं रहेगा तो ये तीनों भाई उसकी हुकूमत की गोश्त लगी हड्डी के लिए सड़क के कुत्तों की तरह लड़ेंगे। जब वह आँखें बन्द करके खेल में जुटे अपने बच्चों के सरपट दौड़ते घोड़ों की टापें सुनता तो वह सलीम को अपने ख़िलाफ़ बग़ावत का परचम बुलन्द करते और फिर नाकाम होते देखता, किसी पिद्दी टिड्डे की तरह, जो वह था। *हम उसे माफ़ कर देंगे, बेशक हम उसे ज़िन्दा रहने देंगे, अपने बेटे को, जो इतना उम्दा घुड़सवार था, इतना दमकता हुआ, ऐसी शाही हँसी हँसने वाला*। बादशाह ने लम्बी साँस छोड़ी। उसे अपने बेटों पर भरोसा नहीं था।

ऐसे मामलों से प्यार-मुहब्बत का सवाल और भी रहस्यमय और भेद-भरा बन जाता था। बादशाह को उन तीनों लड़कों से प्यार था जो उसके सामने मैदान में सरपट घोड़े दौड़ा रहे थे। अगर उसके नसीब में उनके हाथों मरना लिखा हो तो वह उस बाँह को चूमेगा जो यह घातक वार करेगी। मगर जब तक उसके शरीर में साँस थी, उन नन्हें हरामियों को ऐसा करने की छूट देने का उसका कोई इरादा नहीं था। वह उन्हें इससे पहले जहन्नुम रसीद करना पसन्द करेगा। वह शहंशाह था, अकबर। किसी आदमी की मजाल नहीं थी कि उससे छेड़-छाड़ करे।

उसे सूफ़ी शेख़ सलीम चिश्ती पर विश्वास था जिनका मक़बरा जुम्मा मस्जिद के आँगन में खड़ा था, लेकिन शेख़ साहब मर चुके थे। उसे कुत्तों, संगीत, शायरी, एक हाज़िरजवाब दरबारी और एक बेगम पर भरोसा था जिसे उसने ख़ला से, शून्य से पैदा किया था। उसे ख़ूबसूरती, मुसव्विरी और अपने पुरखों की सूझ-बूझ पर विश्वास था। दूसरी चीज़ों में, बहरहाल, उसका विश्वास ढीला पड़ने लगा था; मिसाल के लिए, मज़हबी अक़ीदे में। वह जानता था कि ज़िन्दगी का भरोसा नहीं किया जा सकता था, दुनिया इस क़ाबिल नहीं थी कि उस पर